Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> ते पाप उदय दुख उपजे,
> जब कोई म करजो रोस।
> आप कीधां जिसा फल भोगवे,
> कोई पुदगल रो नहीं दोस।।
>
> पाप के उदय से दुःख उत्पन्न हो तब मनुष्य को क्षोभ नहीं करना चाहिए। जीव जैसे कर्म करता है वैसे ही फल उसे भोगने पड़ते हैं। इसमें पुद्गलों का कोई दोष नहीं है।
>
> – आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 36 • 09 जून - 15 जून, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 07-06-2025 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

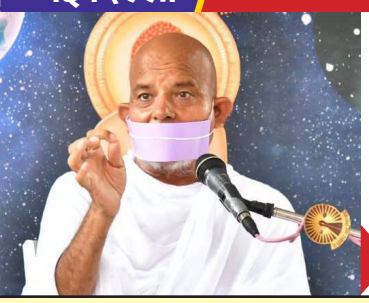

गृहस्थ जीवन में कर्म के साथ जोड़ें धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

ज्ञान और प्रत्याख्यान से जीवन में होता है उजाला : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 16

Address Here

मित बोलने वाला होता है सज्जनों में प्रशंसनीय : आचार्यश्री महाश्रमण

मुख्यमुनिश्री के 38वें जन्मदिवस पर आचार्य श्री ने दिया साधना, सेवा और परिश्रमशीलता का आशीष

शिनावाड।
31 मई, 2025

मानवता के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 11 किमी का विहार कर शिनावाड के प्राथमिक विद्यालय में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए परम पूज्य ने फरमाया कि हमारे जीवन में वाणी और भाषा एक महत्वपूर्ण तत्व है। आदमी बोलता है और बोलकर अपने विचार दूसरों तक पहुंचा सकता है। बोली हुई बातों को सुनकर दूसरों के विचार भी ग्रहण किए जा सकते हैं।

आदमी की भाषा विकसित है। कितनी भाषाएं हैं। एक भाषा में कितने-कितने शब्द होते हैं और कितने-कितने ग्रंथ उपलब्ध हैं। शास्त्रों में बोलने के बारे में निर्देश दिया गया है कि मित (संयमित) बोलो। अपरिमित बोलना असुहावना और अहितकर हो सकता है। मौन करना भी साधना का एक अंग है। बोलने में भी हमें विवेक रखना चाहिए। जो मित बोलता है, वह विद्वानों और सज्जनों में प्रशंसनीय होता है। मौन रहना आसान नहीं है।

पूज्यप्रवर ने एक प्रसंग के माध्यम से समझाया कि ध्यान करने से पहले मौन रखना सीखें। न बोलना भी एक साधना है।

(शेष पेज 13 पर)

स्वाध्याय से निर्धारित हो सकती है जीवन की दिशा : आचार्यश्री महाश्रमण

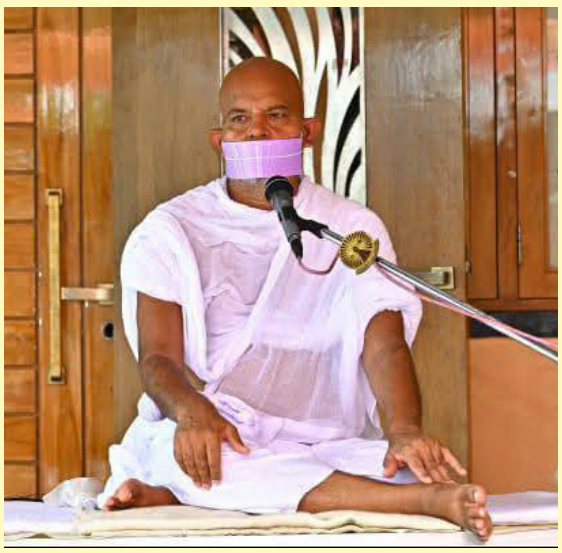

इपलोड़ा।
2 जून, 2025

मानवता के महामसीहा, युगप्रवर्तक आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 9 किमी का विहार कर इपलोड़ा ग्राम में जयंतीभाई शर्मा के निवास स्थान में पधारे। शर्मा निवास में आयोजित धर्मसभा में पूज्यवर ने ज्ञान, स्वाध्याय और आध्यात्मिक दिशा के महत्व पर उद्बोधन देते हुए फरमाया कि 'हमारे जीवन में ज्ञान का अत्यंत महत्व है।' ज्ञान दो प्रकार का होता है— लौकिक विद्या का और आध्यात्मिक विद्या का। लौकिक ज्ञान जहां जीवन की दुनियावी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, वहीं आध्यात्मिक ज्ञान आत्मा के कल्याण और मोक्षमार्ग में पथप्रदर्शक बनता है।

पूज्यवर ने जोर देकर कहा कि धर्मशास्त्रों का स्वाध्याय आत्मदर्शन का माध्यम बन सकता है। स्वाध्याय से जीवन की दिशा निर्धारित हो सकती है, और उसका निरंतर अभ्यास ज्ञान को कंठस्थ और चिरस्थायी बना देता है। ज्ञान का पुनरावर्तन स्मृति को स्थायित्व प्रदान करता है।

उन्होंने वर्तमान भौतिकतावादी युग में बालकों को केवल भौतिकता में रचने बसने से सावधान रहने की सीख दी और ज्ञानशालाओं के माध्यम से उन्हें धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा देने की आवश्यकता बताई। पूज्यवर ने कहा कि 'कोरी भौतिकता समस्याएं उत्पन्न कर सकती है, अतः उसके साथ आध्यात्मिकता का अनुकरण आवश्यक है।'

धार्मिक कथाओं और संत प्रवचनों को भी प्रेरणास्पद बताते हुए आचार्यश्री ने कहा कि 'एक सार्थक विचार भी जीवन की दिशा और दशा को परिवर्तित कर सकता है।' धर्मग्रंथों का सतत अध्ययन श्रेष्ठ विचारों का भंडार बन सकता है। उन्होंने श्रावकों से स्वाध्याय में प्रमाद न करने और समय मिलने पर अवश्य स्वाध्याय करने का आह्वान किया।

मंगल प्रवचन के उपरांत जयंतीभाई शर्मा ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 जून - 15 जून, 2025

सभी प्राणियों को समझें आत्मतुल्य : आचार्यश्री महाश्रमण

बडोली।
1 जून, 2025

आत्मा एक अमूर्त तत्व है, जिसे इन्द्रियों से न तो देखा जा सकता है, न ही अनुभव किया जा सकता है, किंतु वही अध्यात्म की नींव है। आत्मा के सिद्धांत पर ही सम्पूर्ण आध्यात्मिक भवन टिका हुआ है। संसार में दो प्रकार के द्रव्य होते हैं—मूर्त और अमूर्त। जिसमें वर्ण, रूप, रस, गंध, स्पर्श हो वह मूर्त और जिसमें ये सभी नहीं होते, वे अमूर्त होते हैं। जो आंखों से दिखाई देते हैं, सभी पुद्गल होते हैं। आत्मा इन्द्रियों के लिए ग्राह्य नहीं है। आत्मा अशोष्य, अमूर्त, शाश्वत, अकाट्य और अदाह्य तत्व है। आत्मा को गलाया, भिंगोया, सुखाया या जलाया नहीं जा सकता है।

आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है, जब तक उसे मोक्ष नहीं मिल जाता। जिस प्रकार आदमी पुराने कपड़ों को छाड़ता है, आत्मा उसी प्रकार पुराने और जीर्ण-शीर्ण शरीर को छोड़कर नए शरीर में प्रवेश कर जाती है।

छः द्रव्यों में से केवल पुद्गल द्रव्य मूर्त है, शेष पांच द्रव्य अमूर्त हैं। पूज्यवर ने एक उदाहरण के माध्यम से कहा कि जब हवा और सुगंध को भी हाथ में पकड़कर नहीं दिखाया जा सकता, तो आत्मा जैसे अमूर्त तत्व को इन्द्रियों से जानना असंभव है। उपरोक्त पावन प्रेरणा पाथेय जिनवाणी के महान प्रवक्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मेघरज के श्री पी.सी.एन. हाईस्कूल में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किया।

पूज्यवर ने आत्मा के गुणों पर प्रकाश डालते हुए आगे फरमाया कि आत्मा अमर है, शरीर नश्वर है। कर्मों के कारण आत्मा दुःखी बन जाती है, क्योंकि उसमें राग, द्वेष और कषाय जैसे दोष जुड़ जाते हैं। जब ये दोष छूटते हैं, तब आत्मा परम लक्ष्य अर्थात मोक्ष को प्राप्त कर सकती है। यही मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य है। पूज्यवर ने कहा, 'हम क्रियावादी हैं और आत्मा उसका मूल आधार है। हमें सभी प्राणियों को आत्मतुल्य समझना चाहिए। जैसा सुख हमें प्रिय है, वैसा ही सुख सबको प्रिय है। इसलिए किसी भी जीव को दुख न पहुँचाएं।'

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री जी ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा कि धर्म वह है, जिससे व्यक्ति का अभ्युदय और कल्याण होता है। धर्म चित्त की शुद्धि और शांति का मार्ग है, किंतु राग-द्वेष और कषाय धर्म की राह में व्यवधान बनते हैं। इनसे मुक्त होकर ही मोक्ष की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है। अपनी वैराग्यभूमि में मुनि कोमलकुमारजी ने आराध्य के स्वागत में हृदयोद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल और ज्ञानशाला द्वारा भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई। मेघरज सभाध्यक्ष लादुलाल माण्डोत, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष निलेश गांधी ने अपने भाव प्रकट किए। मुनि कोमलकुमारजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजन बाबूलाल दक व निलेश दक ने अपनी अभिव्यक्ति दी। बालिका जैन्सी दक व यशवी कोठारी ने अपनी बालसुलभ प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी द्वारा किया गया।

धम्म जागरण में गूंजे भक्ति के स्वर

उदयपुर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, उदयपुर के तत्वावधान में राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत की अध्यक्षता में भक्ति संध्या का आयोजन नगर निगम रंगमंच में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। भक्ति संध्या में सैकड़ों श्रोताओं ने भावविभोर होकर भक्ति गीतों का आनंद लिया। भुवनेश्वर से समागत संघ गायक कमल सेठिया ने अपनी मधुर वाणी से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलचंद मीणा, प्रमोद सामर, ओ.पी. जैन सहित समाज एवं शहर के अनेक गणमान्य अतिथियों ने सहभागिता कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष राजेंद्र चंडालिया ने सभी का स्वागत किया। उन्होंने अब तक आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी दी तथा आगामी योजनाओं की भी जानकारी साझा की। फोरम की फेमिना विंग की बहनों ने गीत की सुमधुर प्रस्तुति दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने बताया कि उदयपुर में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की नींव रखी गई थी और वर्तमान में 11,000 से अधिक सदस्य हैं। टीपीएफ का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग देना है, विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए जिन्हें आर्थिक कारणों से शिक्षा हेतु लोन नहीं मिल पाता। ऐसे विद्यार्थियों को न्यूनतम दर पर लोन उपलब्ध कराकर उनकी शिक्षा में सहयोग किया जा रहा है। साथ ही, उदयपुर में आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर खोलने की भी घोषणा की गई।

उदयपुर ब्रांच के मंत्री चिराग कोठारी ने बताया कि यह भक्ति संध्या, आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना के लिए आयोजित की गई थी, जिसमें 91 से अधिक बच्चों की शिक्षा की फीस दानदाताओं द्वारा वहन की गई। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, उदयपुर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन डिंपी जैन ने किया। इस अवसर पर निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, राष्ट्रीय पदाधिकारी सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

महाश्रमण अभिवंदना कार्यक्रम का आयोजन

रायपुर। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में महाश्रमण अभिवंदना (भक्ति संध्या) का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर ने महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल कालेज आडिटोरियम में किया। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण संगायक ऋषि दुगड़ ने अपनी सुमधुर अभिवंदना प्रस्तुति से उपस्थित श्रोताओं को भाव विभोर कर अंत तक बांधे रखा।

आयोजन के साथ ही गुरु इंगित आराधना समता की साधना शनिवारीय सामायिक का भी आयोजन सायं 7 से 8 बजे तक किया गया।

आयोजन के मुख्य सहयोगी सुरेन्द्र रितु चौरड़िया व विशेष सहयोगी किरण देवी अमृत लाल बरलोटा रहे। आयोजन में विशेष रूप से रायपुर नगर निगम की पार्षद अंजलि जितेन्द्र गोलछा उपस्थित थी।

नवधारा-सेवा, संस्कार, संगठन के महाकुंभ का आयोजन

उधना।

तेरापंथ युवक परिषद् उधना द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम 'नवधारा – सेवा, संस्कार, संगठन के महाकुंभ' का आयोजन डॉ. मुनि आलोककुमार जी ठाणा-2 एवं मुनि अनंतकुमार जी ठाणा-2 के सान्निध्य में तथा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए तेरापंथ युवक परिषद् उधना के अध्यक्ष गौतम आंचलिया ने अतिथियों सहित उपस्थित जनसमूह का आत्मीय स्वागत किया। इसके पश्चात परिषद् के मंत्री अर्पित नाहर ने नवधारा कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा, उद्देश्य और आगामी गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने नवधारा जैसे आयोजनों की आवश्यकता और प्रभाव पर विचार व्यक्त करते हुए संगठन के प्रति युवाओं की आस्था, सहभागिता तथा नेतृत्व क्षमता की सराहना की। उन्होंने तेरापंथ युवक परिषद् उधना की कर्मठ टीम की आयोजन क्षमता की भी मुक्तकंठ से प्रशंसा की। इस अवसर पर अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता, संगठन मंत्री अमित सेठिया, तेरापंथ युवक परिषद् उधना के प्रभारी कुलदीप कोठारी, अभातेयुप की ओर से सुनील चंडालिया, शैलेश बाफना, रौनक रणोत, उत्कर्ष खाब्या एवं JTN के संपादक पवन फुलफगर की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम में स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, युवाओं एवं श्रावक समाज की भागीदारी ने समूचे वातावरण को ऊर्जावान बना दिया।

सेवा के मंत्र को आत्मसात करते हुए और नवधारा के अंतर्गत मानवता के प्रति अपनी सच्ची प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का सफल आयोजन साउथ गुजरात यूथ कॉन्क्लेव के साथ किया गया। इस शिविर में कुल 33 यूनिट रक्त एकत्र किया गया।

संतों के आगमन से मुस्कराती है संस्कृति

इंदौर।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि अर्हत कुमार जी ठाणा-3 का इंदौर में भव्य नगर प्रवेश हुआ। यह नगर प्रवेश आचार्य तुलसी सेतु से शोभायात्रा के रूप में आरंभ होकर तेरापंथ सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रमेश-निर्मला कोठारी के निवास स्थान तक सम्पन्न हुआ। स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के नवकार मंत्र के उच्चारण से हुई। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत की मधुर प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा ने सभा की ओर से मुनिश्री का आत्मीय स्वागत किया, वहीं तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अर्पित जैन ने स्वागत भाषण के साथ युवक परिषद की ओर से स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

मुनि अर्हत कुमार जी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा, 'आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा दृष्टि से हमारा इंदौर महानगर में प्रवेश हुआ है। जैसे वसंत के आगमन से प्रकृति मुस्कराती है, वैसे ही संतों के आगमन से संस्कृति मुस्कराती है। संतों के चरण जिस धरा पर पड़ते हैं, वह भूमि भी प्रफुल्लित हो जाती है।' उन्होंने आगे कहा, 'आप सभी 'मैं' नहीं, 'आप' की मानसिकता को आत्मसात करें। सकारात्मक दृष्टिकोण रखें और समन्वय की भावना को प्रकट करें। यदि आप सभी की वाणी से समर्पण और सौहार्द का स्वर मुखरित हो तो वर्ष 2031 में परम पावन आचार्य श्री महाश्रमण जी का इंदौर में चातुर्मास सुनिश्चित हो सकता है।'

मुनिश्री ने इंदौरवासियों से आग्रह किया कि वे संगठन को सशक्त और अनुशासित बनाएं तथा चातुर्मास के दौरान समय का श्रेष्ठ नियोजन करें। आचार्य श्री भिक्षु की 300वीं जन्म जयंती के अवसर पर 300 तेला करने का संकल्प लें—यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर मुनिश्री ने 100 वर्षीय सेवा भावी शांतादेवी कोठारी के आध्यात्मिक जीवन से प्रेरणा लेने का भी आग्रह किया।

मुनि भरत कुमार जी ने नगर प्रवेश के भावपूर्ण शब्दों की व्याख्या करते हुए सभी से आत्मा को वैभव सम्पन्न बनाने के लिए चातुर्मास का पूर्ण लाभ लेने का अनुरोध किया। मुनि जयदीप कुमार जी ने वक्तव्य देते हुए कहा - अब जागने का समय आ गया है। यह चातुर्मास हम सभी के लिए संतों के संग का सौभाग्य है। इस अवसर पर सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रमेश कोठारी, महिला मंडल अध्यक्षा ममता सामोता, टीपीएफ कोषाध्यक्ष सावन गादिया, अणुव्रत समिति मंत्री प्रकाश बैद, सभा के पूर्व कार्याध्यक्ष विजयसिंह सुराना, प्रेक्षा फाउंडेशन के राष्ट्रीय संयोजक राजेन्द्र मोदी सहित कई पदाधिकारियों ने अपने भाव व्यक्त किए।

'अतिथि देवो भवः' की परंपरा का निर्वहन करते हुए जिला पंचायत CEO सिद्धार्थ जैन और श्री जी.डी. अग्रवाल का सम्मान सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा, उपाध्यक्ष रमेश कोठारी एवं तेयुप अध्यक्ष अर्पित जैन द्वारा साहित्य व दुपट्टा भेंट कर किया गया।

साथ ही डॉ. शीतल जैन का सम्मान महिला मंडल अध्यक्षा ममता सामोता और मंत्री मोना बम्बोरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री राकेश भंडारी ने किया, तथा आभार सभा के सहमंत्री मनीष दुग्गड़ ने व्यक्त किया।

महाश्रमण आर्ट गैलरी में प्रतिभागियों का दिखा हुनर

उदयपुर।

तुलसी निकेतन विद्यालय प्रांगण में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में संपूर्ण तेरापंथ समाज उदयपुर के समक्ष 12 प्रतिभागियों द्वारा निर्मित सुंदर कलाकृतियाँ प्रस्तुत की गईं। इन कलाकृतियों का निर्माण बड़ों के साथ-साथ कई बच्चों ने भी अपने नन्हे-नन्हे हाथों से किया और तेरापंथ युवक परिषद् उदयपुर को प्रेषित किया।

इस विशेष आर्ट गैलरी कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल नाहटा, सभा मंत्री अभिषेक पोखरणा, तेरापंथ महिला मंडल से अध्यक्षा सीमा बाबेल, मंत्री ज्योति कच्छारा, अणुव्रत समिति से प्रणिता तलेसरा, तुलसी निकेतन से अरुण कोठारी सहित कई गणमान्य व्यक्तियों और युवा साथियों की उपस्थिति रही।

तेरापंथ युवक परिषद् उदयपुर के अध्यक्ष भूपेश खमेसरा ने अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में साध्वी कल्पयशा जी एवं सभी वर्षीतप करने वाले तपस्वियों के प्रति मंगलकामनाएँ व्यक्त करते हुए, आचार्य महाश्रमण आर्ट गैलरी में पधारे सभी का आत्मीय स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस आर्ट गैलरी के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा और भावों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम मिला है।

उन्होंने बताया कि चित्रकला और क्राफ्ट वर्क जैसे रचनात्मक माध्यमों से समाज की नई प्रतिभाओं की पहचान की जा सकती है तथा ऐसे कार्यक्रमों से उन्हें प्रोत्साहन भी प्राप्त होता है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ देते हुए उनके प्रयासों की सराहना की।

तेरापंथ युवक परिषद् के उपाध्यक्ष अशोक चौरडिया ने बताया कि कलाकृतियों का सार्वजनिक अवलोकन किया गया तथा विद्यालय के चित्रकला एवं क्राफ्ट वर्क के अध्यापक एवं प्रधानाचार्य द्वारा भावना, संदेश, वेस्ट से बेस्ट, रंग संयोजन, चित्रकला एवं समग्र प्रस्तुति के आधार पर सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियों का चयन किया गया।कार्यक्रम के समापन पर तेयुप मंत्री साजन मांडोत ने सभी प्रतिभागियों एवं आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए चयनित सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियों के नामों की घोषणा की।

इनमें प्रथम स्थान महक कोठारी, द्वितीय स्थान ताश्वी जैन एवं तृतीय स्थान दिशा पोरवाल को प्राप्त हुआ।

महाश्रमण आर्ट गैलरी कार्यक्रम का आयोजन

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद द्वारा 'महाश्रमण आर्ट गैलरी' कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन तेरापंथ भवन, शाहीबाग में किया गया। प्रदर्शनी का शुभारंभ मुनि धर्मरुचिजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि रजनीश कुमारजी एवं मुनि जम्बूकुमार जी के सान्निध्य में हुआ।

इस अवसर पर युवा दिवस सह-संयोजक पंकज डांगी एवं अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया की विशेष उपस्थिति रही, जिन्होंने कलाकारों का उत्साहवर्धन किया। आर्ट गैलरी में सभी प्रतिभागियों ने अपने सृजनात्मक कौशल का परिचय देते हुए अपने आराध्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की विविध मुद्राओं को अपनी कला के माध्यम से सुंदर चित्रों में प्रस्तुत किया। रंगों और रचनात्मकता का अद्भुत संगम देखने को मिला, जिसने सभी उपस्थितजनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजकों के रूप में अक्षय संकलेचा, विकास छाजेड़, अजीत सेठिया, अभिषेक छाजेड़ तथा किशोर मंडल का विशेष योगदान रहा।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से तेरापंथ सभा अहमदाबाद के अध्यक्ष अर्जुन बाफना, मंत्री विकास पितलिया, तेयुप अध्यक्ष पंकज घीया, संपूर्ण प्रबंध मंडल एवं अनेक गणमान्य श्रावकों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 जून - 15 जून, 2025

आचार्यश्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस सादर अभिवंदना

विरल सिद्धपुरुष : आचार्यश्री तुलसी

● साध्वी अणिमाश्री, डॉ. साध्वी सुधाप्रभा ●

तेरापंथ के नवम गणाधीश आचार्य तुलसी एक ऐसे सिद्ध पुरुष थे जिनके चरणों का स्पर्श पाकर धरती हरी-भरी हो जाती, माटी चंदन बन सुवासित हो जाती, दिशाएं दर्शनीय बन जातीं, मौसम मनभावन बन जाता और हवाएं मंद-मंद मुस्कान बिखेरने लगतीं।

आचार्य तुलसी क्षीरास्रव लब्धिधारी सिद्ध पुरुष थे। उनकी अमृत देशना को सुनकर लोग मंत्र मुग्ध हो जाते थे। उनकी अमृत स्राविणी वाणी तृप्ति का अहसास कराती थी। घंटों उनकी वाणी को सुनने के बाद भी मन और अधिक सुनने को उत्कंठित रहता था।

आचार्य तुलसी तेजसंपन्न सिद्ध पुरुष थे, वे तेरापंथ के तेज थे। उनकी साधना ने संघ को तेजस्विता प्रदान की। उनके संयम के ओज ने संघ को ओजस्विता प्रदान की। उनके वर्चस्वी व्यक्तित्व ने संघ को वर्चस्विता प्रदान की। उनकी यशोगाथा ने संघ को यशस्विता प्रदान की।

आचार्य तुलसी प्रेरणापुञ्ज सिद्ध पुरुष थे। उनकी जीवन-पोथी का हर पृष्ठ प्रेरणा की स्याही से लिखा हुआ है। उनकी पोथी का हर पृष्ठ पढ़ने वाले के जीवन में प्रेरणा का प्रदीप प्रज्ज्वलित करता है। सिद्ध पुरुष का प्रेरणा संदेश अंतर्घट को आलोकित करने वाला है।

आचार्य तुलसी वज्रसंकल्पी सिद्ध पुरुष थे। आचार्य तुलसी संकल्प के महादेवता थे, उनके सारे संकल्प फलदायी बने। उन्होंने अपने जीवन में एक संकल्प किया था कि 'मुझे जीवन भर काम करना है'। गीत में लिखा है –

"**जीवन भर काम करूंगा, गण का भंडार भरूंगा।**
संकल्प अटूट निभाया रे, महाप्राण गुरुदेव।"

सचमुच, वह कर्मयोगी कर्म करते-करते कृतकाम बन गया।

आचार्य तुलसी विकासशील सिद्ध पुरुष थे। उनका जीवन विकास की वर्णमाला से गुंफित एक महाग्रंथ है। 'अथ' से 'इति' तक उनका जीवन विकास की कहानी है। उन्होंने संघ में विकास के पदचिह्न अंकित किए। उन्हीं पदचिह्नों का अनुसरण कर तेरापंथ विकास का पर्याय बन गया है।

आचार्य तुलसी असांप्रदायिक सिद्ध पुरुष थे। यद्यपि आचार्य तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य थे, किन्तु वे कभी संप्रदाय के घेरे में आबद्ध नहीं रहे। उनका चिंतन, भाव, भाषा और शैली में मानव मात्र का कल्याण निहित था। उन्होंने स्वयं एक बार प्रवचन में कहा था –

"**नहीं उपाधि, नहीं विशेषण, नहीं जाति और पंथ है।**
बस मेरा इतना-सा परिचय सुनो यह तुलसी संत है।"

आचार्य तुलसी प्रयोगधर्मी सिद्ध पुरुष थे। आचार्य तुलसी के शासनकाल को नूतन प्रयोगों की प्रयोगशाला कहा जा सकता है। उन्होंने व्यक्तिगत साधना की दृष्टि से अनेक प्रयोग किए जिससे साधना और अधिक तेजस्वी हो गई। संघीय धरातल को भी प्रयोगभूमि बनाया जिससे संघ की सुरभि सात समंदर पार पहुँच गई।

आचार्य तुलसी समाज सुधारक सिद्ध पुरुष थे। आचार्य तुलसी का मानस शांत था तो क्रांत भी था, रूढ़ था तो गतिशील भी था। उनके क्रांत मानस ने समाज में नवक्रांति की उद्घोषणा की। 'नया मोड़' उसी क्रांति का उपक्रम था।

'नया मोड़' कार्यक्रम के अंतर्गत पर्दा प्रथा, मृत्यु भोज, प्रथा रूपी रोना, विधवाओं के काले वस्त्र, दहेज आदि कुप्रथाओं के निवारण के लिए समाजव्यापी सघन कार्यक्रम किए गए। उन्हीं कार्यक्रमों की निष्पत्ति आज समाज के समक्ष है।

आचार्य तुलसी नैतिक क्रांति करने वाले सिद्ध पुरुष थे। आचार्य तुलसी ने देश की आज़ादी के बाद एक नारा दिया था – 'असली आज़ादी अपनाओ'। वे जानते थे कि चारित्रिक उन्नयन के बिना भौतिक विकास से सुदृढ़ भारत का निर्माण नहीं हो सकेगा। इसलिए आचार्य तुलसी ने देश के चारित्रिक उत्थान के लिए एक नैतिक क्रांति की, जो अणुव्रत आंदोलन के नाम से विख्यात हुई। इस क्रांति के माध्यम से आचार्य तुलसी ने लाखों व्यक्तियों को जैन तो नहीं, पर गुडमैन अवश्य बनाया है।

ऐसे विरल सिद्ध पुरुष आचार्य तुलसी की धवल, उज्ज्वल, निर्मल छवि, मनमोहक मूरत आज हमारे नयनों से ओझल हो चुकी है, परंतु उनका करिश्माई कर्तृत्व सदियों तक हमारे अंतःकरण को आलोकित करता रहेगा। उनकी यशकाय संघ की यशवल्लरी को अभिवर्धित करती रहेगी। उनकी कीर्तिगाथा संघ का कीर्तिस्तंभ बनकर सदा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रहेगी।

महाप्रयाण दिवस पर श्रद्धाभिवंदन के साथ –

"तुलसी! तुमने अणु को विराट बनाया है,
हर तरु को सिंचन देकर सरसब्ज बनाया है,
कैसे उऋण होंगे तुम्हारे उपकारों से, ओ सिद्धपुरुष !
तुमने तो पंगु को भी पहाड़ चढ़ाया है।।"

पूजा करूंगी, करती रहूंगी

● 'शासनश्री' साध्वी सुमनश्री ●

हृदय देव मेरे, मैं हूं पूजारी,
पूजा करूंगी, करती रहूंगी।
श्रद्धा की ज्योति, भक्ति के मोती,
अर्पित करूंगी, करती रहूंगी।।

देकर भरोसा, कहां पर गए तुम,
खुली आंख में भी स्वप्न हो गए तुम,
जब तक मिलोगे ना, ढूंढती रहूंगी।।

गीत गुनगुनाते, मौन हो गए तुम,
थम ही गया क्यों गीतों का सरगम,
उत्तर मिलेगा ना, पूछती रहूंगी।।

फूलों से पूछा, कलियों से पूछा,
सागर से पूछा, नदियों से पूछा,
तुलसी कहां है? उस धार मैं बहूंगी।।

आसमां की गोद में, नूर है समाया,
चांद और सितारों में, तुलसी की छाया,
झिलमिल ज्योति को, देखती रहूंगी।।

क्षितिज पार देखा, सूरज चमकता,
लगा जैसे तेरा ही रूप है दमकता,
अनिमेष पलकों से निहारती रहूंगी।।

क्या तुम बसे हो दिव्य धरा में,
करो सिंहनाद, वाणी सुन लूं ज़रा मैं,
कण-कण जहां का, खोजती रहूंगी।।

तर्ज़ – तुम्हीं मेरे मंदिर

युवा दिवस पर श्रद्धा, भक्ति और संगीत का भव्य संगम

विजयनगर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस 'युवा दिवस' के पावन अवसर पर, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेयुप विजयनगर द्वारा तेरापंथ भवन विजयनगर में 'महाश्रमण अभिवंदना - एक शाम ज्योतिचरण के नाम' भक्ति संध्या का आयोजन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ठाणा- 2 द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से हुई। मुनि आदित्यकुमारजी द्वारा गुरुदेव को समर्पित गीत का संगान किया गया। इसके पश्चात जानवी कावड़िया ने मंगलाचरण के रूप में महाश्रमण अष्टकम का संगान किया। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सभी अतिथियों का आत्मीय स्वागत करते हुए युवा दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला।

तेरापंथी सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने शुभकामनाएं संप्रेषित की। गायक ऋषभ आँचलिया (तिरुपुर) की प्रस्तुति कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रही। प्रसिद्ध गायक मनीष पगारिया ने भी अपनी सुमधुर प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम का संयोजन अभिषेक कावड़िया द्वारा किया गया। इस अवसर पर राजराजेश्वरी नगर सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़, तेयुप हनुमंत नगर अध्यक्ष कमलेश झाबक, तेयुप विजयनगर के पूर्व अध्यक्ष, प्रबंध मंडल, परिषद साथी, किशोर मंडल साथी, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू गादिया, टीपीएफ अध्यक्ष ललित बैगानी, अभातेयुप सदस्य, सहित परिषद् परिवार एवं सैंकड़ों श्रद्धालुओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

तेयुप विजयनगर द्वारा मुख्य प्रायोजकों एवं मुख्य संगायक का सम्मान कर आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम के अंत में तेयुप विजयनगर मंत्री संजय भटेवरा ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

कोकराझार। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। इस शिविर में विभिन्न रोगों के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं और इसे सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। कुल छह विशेषज्ञ डॉक्टर— डॉ. सिद्धार्थ पींचा, डॉ. रजत पींचा, डॉ. अरविंद पटावरी, डॉ. खुशबू कोठारी, डॉ. नीता बोथरा, डॉ. अमृता पींचा तथा उनके सहायकगण उपस्थित रहे और निःशुल्क परामर्श दिया। शिविर में कुल 81 लाभार्थियों ने स्वास्थ्य सेवा प्राप्त की। कार्यक्रम के दौरान जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष किशनलाल नाहटा ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. सिद्धार्थ पींचा ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए सेवा भावना के महत्व को रेखांकित किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री अमित कुमार छाजेड़ ने किया।

सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग, की सप्त दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ तेरापंथ भवन, राजाजीनगर में साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने पधारे हुए ट्रेनर पलक दक एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। राष्ट्रीय सीपीएस सलाहकार सतीशजी पोरवाड़ एवं सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी ने अपने विचार व्यक्त किए एवं किशोर मण्डल से आर्यन गोलेच्छा ने सीपीएस ट्रेनर पलक जैन का परिचय दिया।

सीपीएस प्रशिक्षक पलक जैन ने कार्यशाला के प्रथम दिन सभी प्रतिभागियों का एक दूसरे का परिचय सत्र के माध्यम से कार्यशाला प्रारंभ करते हुए वक्तव्य कला की आवश्यकता बताते हुए एक अच्छे वक्ता के लिए उसके परिधान का महत्व, खड़े रहने का तरीका, बात करने की कला और लोगों को अपने वक्तव्य के प्रति आकर्षित करना और किस तरह से आत्मविश्वास के साथ मंच पर आकर बात करना और अपने अंदर छिपे भय को बाहर निकालने के बारे में विस्तार से समझाया।

कार्यशाला में प्रतिभागियों ने बहुत ही उत्साह के साथ भाग लिया। इस अवसर पर तेयुप कार्यकर्ता, सीपीएस ट्रेनर लता नवलखा, सीपीएस प्रोविजनल ट्रेनर वनिता बोल्या, प्रिया दक की उपस्थिति रही।

संचालन तेयुप मंत्री जयंतीलाल गांधी ने किया।

संक्षिप्त खबर

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 के प्रमाण पत्र वितिरित

हावड़ा। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 के प्रमाण पत्र और मोमेंटो वितरण अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा किया गया। अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत, उपाध्यक्ष रणजीत सिंह बैद ने श्री हनुमान बालिका विद्यालय, श्री जैन विद्यालय गर्ल्स, श्री जैन विद्यालय बॉयज, हावड़ा शिक्षा सदन गर्ल्स, हावड़ा शिक्षा सदन बॉयज, मॉडर्न ग्लोरी स्कूल,सेंट पोल्स एजुकेशनल स्कूल, हावड़ा शिक्षा निकेतन, शिवपुर जुट मिल हाइस्कूल में प्रमाण पत्र एवं मोमेंटो वितरण करते हुए एसीसी 2025 के लिए रजिस्ट्रेशन भी करवाया गया।

रियायती स्वास्थ्य जांच का आयोजन

रायपुर। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के माध्यम से जैन तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्यश्री महाश्रमण जी के 16 वें पट्टोत्सव के उपलक्ष्य में उपलब्ध सभी प्रकार की जांचों पर 16% की विशेष छूट दी गई। जिसका लाभ 12 सामान्य जनों द्वारा लिया गया। आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस उपलक्ष्य में एक दिवसीय 52% की विशेष छूट तीन प्रकार की टेस्टिंग पर दी गई। जिसका लाभ कुल 20 जनों द्वारा लिया गया।

युवा दिवस पर कार्यक्रम

इचलकरंजी। अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, इचलकरंजी द्वारा तेरापंथ भवन, इचलकरंजी में आचार्य महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। संकल्पों के महाकुंभ के साथ 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाश्रमण गुरवे नमः' का जाप किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद के सदस्य उपस्थित थे।

महाश्रमण आर्ट गैलरी

अमराईवाड़ी ओढव। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के 52वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के अवसर पर अभातेयुप द्वारा निर्देशित महाश्रमण आर्ट गैलरी के तहत अमराईवाड़ी श्रावक समाज से प्राप्त कलाकृतियों का प्रदर्शन तेरापंथ भवन, अमराईवाड़ी में तेयुप, अमराईवाड़ी द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। तेयुप, अमराईवाड़ी अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने स्वागत वक्तव्य दिया। संयोजक किरण दुग्गड़ एवं आरती दुग्गड़ ने कार्यक्रम की जानकारी दी। महाश्रमण आर्ट गेलेरी में तीन जज की नियुक्ति की गई। तेरापंथ सभा मंत्री निर्मल ओस्तवाल, सीपीएस जोनल ट्रेनर आकाश चंडालिया एवं क्रिस्टल स्कूल की अध्यापिका स्वाति ने प्राप्त 25 कलाकृतियों का अवलोकन कर विजेताओं की घोषणा की।

एस्पायर आर्क का आयोजन

वड़ोदरा। तेरापंथ युवक परिषद वड़ोदरा के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल वड़ोदरा द्वारा एस्पायर आर्क कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता ब्लू ब्रिगेड सदस्य अंकुर बाफना ने धर्मसंघ से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया और TKM एक्सिस के अनेकों आयामों से अवगत करवाया। उन्होंने विभिन्न गेम्स द्वारा साथ रहने और आगे बढ़ने की सीख दी। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद वड़ोदरा के पदाधिकारीगण की भी उपस्थिति रही। तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा मुख्य वक्ता का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में 9 किशोरों की उपस्थिति रही।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **गांधीनगर, दिल्ली।** लाडनूं निवासी पन्नालाल - पुष्पा देवी बैद की सुपौत्री, पंकज - स्वेता बैद की सुपुत्री का नामकरण संस्कार संस्कारक राकेश पुगलिया, महेंद्र कुमार श्यामसुखा ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

■ **दिल्ली।** बिदासर निवासी, दिल्ली प्रवासी विनयश्री - करुण कुमार सेठिया का नूतन गृहप्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विकास सुराणा, मनीष बरमेचा ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **साउथ कोलकाता।** सुरेंद्र दूगड़ का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उनके नवीन निवास स्थान में जैन संस्कारक महावीर दूगड़ एवं सह संस्कारक रोहित दूगड़ ने मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** प्रकाशचन्द - विनीता सेठिया के नूतन गृह प्रवेश का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पीयूष लुणिया और विनीत बोथरा ने विधि विधान पूर्वक मंगल मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **दिल्ली।** लाडनूं निवासी, दिल्ली प्रवासी अनिल कुमार बैद सुपुत्र किरणमल बैद का नूतन गृहप्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विमल गुनेचा ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **पूर्वांचल-कोलकाता।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी - पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी प्रतीक भादानी एवं रौनक भादानी (सुपुत्र नगराज भादानी) के नूतन गृह प्रवेश का मंगल कार्यक्रम संस्कारक विजय बरमेचा एवं अनूप गंग ने विधि विधान द्वारा परिवार जनों की उपस्थिति मे संपादित करवाया।

■ **गंगाशहर।** किशन लाल मोहित नाहटा के नूतन गृह का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विपिन बोथरा और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक मंगल मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **सूरत।** कालू निवासी, सूरत प्रवासी संदीप जैन सुपुत्र काशीराम जैन का पाणिग्रहण संस्कार झझू निवासी, सूरत प्रवासी किरण सेठीया सुपुत्री राजेन्द्र सेठीया के साथ संस्कारक विजयकांत खटेड़, मनीष कुमार मालू, पवन कुमार बुच्चा द्वारा सम्पन्न हुआ।

■ **दिल्ली।** चुरु निवासी, दिल्ली प्रवासी डॉ. राहुल जैन सुपुत्र बिमल कुमार - सुशीला बांठिया का विवाह सरदारशहर निवासी, अहमदाबाद प्रवासी गरिमा सुपुत्री नवरतन मंगलप्रभा बुच्चा के साथ संस्कारक विमल गुणेचा, इंदर बैंगानी, संजय संचेती द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

'निवेश, विकास, वसीयत एवं उत्तराधिकार' पर विशेष कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

समाज की आर्थिक साक्षरता और कानूनी जागरूकता बढ़ाने की दिशा में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम ने बिड़ला ऑडिटोरियम, हैदराबाद में उपयोगी और जनसामान्य के लिए खुली कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का विषय था— 'निवेश एवं विकास और वसीयत एवं उत्तराधिकार'— जो आर्थिक योजना, संपत्ति प्रबंधन और उत्तराधिकार के कानूनी पहलुओं को समझने हेतु समर्पित रहा। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत सुराणा व सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से हुई। अध्यक्ष विरेन्द्र घोषल ने सभी का स्वागत किया और सभी संस्थाओं की ओर से सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती ने शुभकामनाएँ दीं। राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद ने TPF के मुख्य आयामों के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम दो सत्रों में विभाजित था, जिसमें चार मुख्य वक्ता उपस्थित हुए— दीपक संचेती, मोहित जैन, विशाल मेहता और ऋषभ लूनिया। पहला सत्र ऋषभ लूनिया और मोहित जैन का रहा, जिसे पंकज संचेती ने संचालित किया। उन्होंने बताया कि 'आज के युग में केवल कमाना ही पर्याप्त नहीं है, सही तरीके से निवेश करना और अपने उत्तराधिकार की योजना बनाना भी अत्यावश्यक है।' वहीं, दूसरा सत्र एडवोकेट दीपक संचेती और विशाल मेहता का रहा, जिसे अणुव्रत सुराणा ने संचालित किया। उन्होंने वसीयत लेखन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'स्पष्ट और विधिपूर्वक तैयार की गई वसीयत न केवल पारिवारिक शांति बनाए रखती है, बल्कि कानूनी विवादों से भी बचाती है।'

कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह ने वक्ताओं से प्रश्न पूछकर अपनी शंकाओं का समाधान भी प्राप्त किया। कार्यशाला में व्यावसायिकों, गृहिणियों, वरिष्ठ नागरिकों एवं युवाओं की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय टीम से कोषाध्यक्ष नरेश कठोतिया, सहमंत्री मोहित बैद, ऋषभ दूगड़, नवीन सुराना और दीपक संचेती उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में मंत्री निखिल कोटेचा ने सभी वक्ताओं और उपस्थित समाज का आभार प्रकट किया। इस कार्यक्रम का संयोजन अनुष बंबोली और तरुण सांखला ने किया। कार्यक्रम का संचालन शिखा सुराणा और दीक्षा सुराणा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 जून - 15 जून, 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

सैंथिया

ऋषभ भवन में आचार्य श्री महाश्रमणजी का जन्मोत्सव एवं पट्टमहोत्सव समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञाजी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों ने सुंदर नाट्य प्रस्तुति द्वारा भावांजलि अर्पित की, वहीं महिला मंडल ने भक्ति भजनों की प्रस्तुति देकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। सभा की ओर से प्रेरणादायक वक्तव्य प्रस्तुत किए गए। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के सदस्य सुमित छाजेड़ एवं तेयुप सहमंत्री आदित्य छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री मोहित सुराणा ने आचार्य श्री महाश्रमणजी के जीवन चरित्र एवं साधना यात्रा की गाथा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का कुशल संचालन परिषद अध्यक्ष सौरभ पुगलिया द्वारा किया गया।

चेन्नई

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशानुसार तेरापंथ युवक परिषद् चेन्नई ने युवा दिवस के उपलक्ष्य पर 'महाश्रमण अभिवंदना' विशाल भक्ति संध्या का आयोजन आचार्य महाश्रमण तेरापंथ स्कूल, माधावरम में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया। मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। तेयुप चेन्नई अध्यक्ष संदीप मुथा ने पधारे हुए सभी गायक कलाकारों एवं श्रावक समाज का स्वागत एवं अभिनन्दन किया। विराट भक्ति संध्या कार्यक्रम में गायक आनंद समदरिया, नवीन बोहरा एवं कौशल बोहरा ने बहुत सुंदर प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ माधावरम ट्रस्ट बोर्ड अध्यक्ष घीसुलाल बोहरा, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष अरिहंत बोथरा, तेयुप चेन्नई प्रबंध मंडल, कार्यसमिति सदस्य, अभातेयुप साथी परिषद् के पूर्व अध्यक्ष, परामर्शक, किशोर मंडल एवं अन्य संघीय संस्था के पदाधिकारी एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन तेयुप मंत्री सुरेश तातेड ने दिया।

अमराईवाड़ी ओढव

अभातेयुप निर्देशानुसार तेरापंथ युवक परिषद् अमराईवाड़ी ओढव द्वारा युवा दिवस के उपलक्ष्य पर महाश्रमण अभिवंदना के अंतर्गत भक्ति संध्या का कार्यक्रम तेरापंथ भवन अमराईवाड़ी में आयोजित किया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने पधारे हुए सभी गायक कलाकारों एवं श्रावक समाज का स्वागत अभिनन्दन किया। कार्यक्रम के संयोजक दिनेश टुकलिया, एवं अल्पेश हिरण ने कार्यक्रम की सम्पूर्ण जानकारी दी। तेयुप मंत्री सुनिल चिप्पड़ ने भी अपनी भावना व्यक्त की। अनेक सदस्यों ने कविता, गीत, भजन के माध्यम से आचार्य श्री महाश्रमणजी की अभिवंदना में अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सभा के मंत्री निर्मल ओस्तवाल, सीपीएस जोनल ट्रेनर आकाश चंडालिया, महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन रवि चंडालिया ने किया।

काजुपाड़ा, मुंबई

अभातेयुप के निर्देशानुसार काजुपाड़ा में 'महाश्रमण अभिवंदना' के उपलक्ष्य में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष नरेश पगारिया ने अपने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों एवं समस्त काजुपाड़ा श्रावक समाज का स्वागत किया। विशेष आमंत्रित गायिका सुधा राजेश कोठारी ने वातावरण भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम में परिषद प्रभारी अमित रांका, अंधेरी परिषद अध्यक्ष गिरीश सिंघवी, किरण कोठारी एवं संदीप चपलोत की उपस्थिति रही। परिषद प्रभारी ने विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में कोषाध्यक्ष अंकुर सिंघवी के साथ युवा शक्ति, महिला मंडल अध्यक्ष अनीता पगारिया, एवं नारी शक्ति का विशेष सहयोग रहा। आभार ज्ञापन राकेश चौधरी ने किया।

राजसमंद

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद राजनगर एवं कांकरोली के संयुक्त तत्वावधान में भिक्षु बोधि स्थल, राजनगर में 'अमृत अभ्यर्थना' समारोह का आयोजन मुनि सुरेश कुमार जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। समारोह की शुरुआत नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुई। 'शासनश्री' मुनि सुरेश कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा - आज का दिन तेरापंथ के लिए स्वर्णिम सूर्योदय का क्षण है, जब आचार्य तुलसी के निर्देश से मुनि सुमेरमलजी ने महज 12 वर्ष की उम्र के मोहन को तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित हुए। आचार्य महाश्रमण इतिहास पुरुष हैं जिन्होंने चरणों से देश - विदेश की यात्रा कर धरती को पावन किया। मुनि संबोध कुमार 'मेधांश' ने इस अवसर पर मां नेमा की स्मृति करते हुए कहा कि व्यक्ति का जीवन उद्देश्य भरा होना चाहिए। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने गीत से आराध्य को वर्धापित करते हुए कहा 'आचार्य श्री में दसों पूर्वाचार्यों की विशेषताएँ समाहित हैं।' कार्यक्रम में वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश डॉ. पीयूष कुमार, अणुव्रत समिति मंत्री रमेश मांडोत, क्रिकेट टेनिस कैप्टन पुलदीप सिंह राव, तथा एंजिनियस युवा के कार्यकारी संपादक राजीव सुराणा ने आचार्य श्री की दीक्षा को जैन इतिहास का अविस्मरणीय अध्याय बताया।

इस अवसर पर भिक्षु बोधि स्थल अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा, तेरापंथ सभा कांकरोली अध्यक्ष लाभचंद बोहरा, तेयुप राजनगर अध्यक्ष विकास मादरेचा, महिला मंडल अध्यक्षाएं सुधा कोठारी एवं ऊषा कोठारी आदि अनेक गणमान्य अतिथियों ने मंच की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ आकर्षण का केंद्र रहीं — जिनमें महिला मंडल द्वारा आचार्य श्री की 11 विशेषताओं की दोहामय प्रस्तुति, ज्ञानशाला के बच्चों का समूहगान व गीत पर भावपूर्ण प्रस्तुति प्रमुख थीं। मंच संचालन सागरमल कावड़िया ने प्रभावशाली ढंग से किया।

सरदारशहर

तेरापंथ युवक परिषद सरदारशहर द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्मदिवस, 52वें दीक्षा दिवस एवं 16वें पट्टोत्सव को समर्पित 'युवा दिवस' का आयोजन श्रद्धा और भक्ति के भावों से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत 'शासनश्री' साध्वी सरोजकुमारी जी, साध्वी प्रमिलाकुमारी जी एवं सहवर्ती साध्वी वृंद के नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। इसके पश्चात् 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाश्रमण गुरवे नमः' मंत्र का जाप करवाया गया। कन्यामंडल द्वारा 'महाश्रमण अष्टकम' की मंगलाचरण प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम की विशेष आकर्षण 'महाश्रमण आर्ट गैलरी' प्रतियोगिता में बच्चों व बड़ों की कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गईं। आचार्य महाश्रमण जी के जीवन पर आधारित इस प्रदर्शनी को कई कैंब्रिज कॉन्वेंट स्कूल, रोज वुड पब्लिक स्कूल, बाल मंदिर विद्यालय, जी डी मित्तल स्कूल और विशेष रूप से राजेंद्र विद्यालय का सहयोग प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में तीन विजेताओं को पुरस्कृत व सात प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। साध्वीवृंद द्वारा भाव विभोर करती प्रस्तुति के साथ, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला आदि संस्थाओं ने भी अपनी प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष लोकेश सेठिया ने आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी संस्थाओं एवं कार्यकर्ताओं का आभार प्रकट किया।

बालोतरा

तेरापंथ भवन, अमृत सभागार में आचार्य श्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव, दीक्षा दिवस एवं पट्टोत्सव अत्यंत श्रद्धा व भक्ति के साथ मनाया गया। यह त्रिवेणी आयोजन 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभा जी, 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी एवं साध्वी संपूर्णयशा जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ हुई, तत्पश्चात् कन्यामंडल की वर्षिता बालड़ ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'संबोधि प्राप्ति के चार दुर्लभ घटक—मनुष्य जन्म, स्तुति, श्रद्धा और संयम—आचार्य महाश्रमण जी के व्यक्तित्व में समाहित हैं। आचार्यश्री का संयम, सत्य और आत्मदर्शन के प्रति समर्पण बेजोड़ है। आपका साधनामय जीवन हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा है।'

साध्वी संपूर्णयशा जी ने कहा कि 'आचार्यश्री का व्यक्तित्व और कर्तृत्व दोनों ही अनुपम हैं। उनके जीवन में सहजता, सरलता और संयम का अद्भुत संगम है।' साध्वी ध्यानप्रभा जी ने 52 वर्ष पूर्व सरदारशहर की धरती पर हुई दीक्षा को स्मरण करते हुए आचार्यश्री के वैराग्य, निष्ठा व कर्तव्यबोध की सराहना की। साध्वी मधुयशा जी ने अपने भावों को कविता के माध्यम से व्यक्त किया, वहीं साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत प्रस्तुत कर आचार्यप्रवर के जीवन मूल्यों को रेखांकित किया। महिला मंडल द्वारा समूहगान प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष महेन्द्र वैद, तेयुप अध्यक्ष रौनक श्रीश्रीमाल, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संखलेचा, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सारिका वागरेचा एवं ज्ञानार्थी पूर्व बालड़ ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मार्दवयशा जी ने कुशलता से किया।

साल्टलेक

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमणजी के 52 वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) पर अभ्यर्थना समारोह का भव्य आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सॉल्ट लेक द्वारा विद्युत भवन अडिटोरियम में आयोजित किया गया । इस अवसर पर वृहत्तर कोलकाता की संघीय संस्थाएं एवं श्रद्धालुगण अच्छी संख्या में उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा आचार्य श्री महाश्रमण हमारी आस्था के केंद्र हैं। उनका जीवन हमारे लिए एक आदर्श व प्रेरणा का स्रोत है। उनका संयम अनुत्तर है, उनकी चिन्तन अनुत्तर है, उनकी चर्या अनुत्तर है, उनका व्यक्तित्व व कर्तृत्व अनुत्तर है। वे निस्पृह, निरभिमानी, निर्भीक चेतना के धनी हैं। उनकी ज्ञान रश्मियों से मानव जाति उपकृत हो रही है। उनका जन्म दीक्षा व आचार्य पदभिषेक तीनों सरदारशहर की धरा पर हुए। आज उनके 52 वें दीक्षा दिवस पर उनके दीर्घायु, चिरायु होने की मंगल कामना करता हूं। मुनिश्री ने युवा दिवस पर युवाओं को संबोधित करते हुए कहा– युवा वह है जो गतिशील है, युवा वह है जो तनाव मुक्त रहता है। उत्साह, लगन और साहस का दूसरा नाम है युवा। युवक ज्ञान संपन्न, आचार संपन्न व विचार संपन्न बने।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा आचार्य श्री महाश्रमण तेजस्वी संन्यास के धारक हैं। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल पूर्वांचल द्वारा महाश्रमण अष्टकम् के संगान से हुआ। स्वागत भाषण श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा साल्टलेक के अध्यक्ष जयसिंह डांगा ने दिया। साल्टलेक सभा के अंतर्गत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने लघु नाटिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर महासभा के कोषाध्यक्ष मदन चंद मरोठी, कोलकाता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली, अभातेयुप कार्यकारिणी सदस्य राजीव बोथरा, अभातेमम की संगठन मंत्री रमण पटावरी, पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी, पूर्वांचल तेयुप अध्यक्ष नवीन सिंघी, तेरापंथ महिला मंडल पूर्वांचल की अध्यक्षा प्रेम सुराणा, टीपीएफ पूर्वांचल के अध्यक्ष विनोद दुग्गड, अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष पन्नालाल सुराणा, ज्ञानार्थी मायरा चिंडालिया ने अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथ सभा साल्टलेक, तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल, उत्तर कोलकाता, तेरापंथ महिला मंडल पूर्वांचल, तेरापंथ महिला मंडल साउथ कोलकाता ने सुमधुर समूह गीतों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

नवीनीकृत तेरापंथ होमियो क्लिनिक का उद्घाटन

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद द्वारा संचालित और हाल ही में नवीनीकृत तेरापंथ होमियो क्लिनिक तथा तेयुप कार्यालय का जैन संस्कार विधि के साथ भव्य उद्घाटन संपन्न हुआ। यह क्लिनिक पिछले 15 वर्षों से समुदाय की सेवा कर रहा है।

सभा को संबोधित करते हुए तेयुप हैदराबाद के अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने क्लिनिक की स्थापना से लेकर अब तक की सफल यात्रा का वर्णन किया, जिसकी शुरुआत पूर्व अध्यक्ष राजेन्द्र बोथरा के कार्यकाल में हुई थी। उन्होंने विजय कुंडलिया की समर्पित सेवा को सराहा, जिन्होंने लगभग एक दशक तक क्लिनिक के संयोजक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके पश्चात सेवारत प्रदीप कोठारी और वर्तमान संयोजक राहुल गोलछा की सेवा भावना की सराहना करते हुए अनुमोदना की।

नवीनीकृत क्लिनिक का फीता खोलकर उद्घाटन विजयकुमार बाफ़ना ने किया। मुख्य जैन संस्कारक ललित लूनिया ने मंगल मंत्रोच्चारण के साथ विधिपूर्वक पूजन संपन्न कराया, जिसमें जिनेन्द्र बैद ने सह-संस्कारक के रूप में सहयोग दिया। भिक्षु प्रज्ञा मंडली के सह-संयोजक शुभम बैद और साथीगण ने इस अवसर पर विजय गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का एक मुख्य आकर्षण ''गौरवशाली संगठन - कल आज कल'' नामक एक विशेष दो-भाग श्रृंखला का अनावरण था। इसका पहला भाग पूर्व अध्यक्ष केवलचंद लूनावत द्वारा और दूसरा भाग पूर्व अध्यक्ष राजेन्द्र बोथरा एवं विजय कुंडलिया द्वारा संयुक्त रूप से अनावरण किया गया। पूर्व अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा ने अभातेयुप के आयाम पट्ट का अनावरण किया। इस अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में तेरापंथ होमियो क्लिनिक की डॉ. स्वप्ना और वासन आई केयर हॉस्पिटल से पधारे डॉ. अरविंद व उनकी टीम को तेयुप हैदराबाद द्वारा सम्मानित किया गया। सहमंत्री जिनेन्द्र सेठिया ने कार्यक्रम की विभिन्न व्यवस्थाओं का कुशलतापूर्वक संचालन किया, जबकि संगठन मंत्री जिनेन्द्र बैद ने पूरे कार्यक्रम का प्रभावी मंच संचालन किया। मंत्री अनिल दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस वर्ष के मुख्य सहयोगी मांगीलाल विजयकुमार बाफ़ना परिवार का सम्मान करते हुए उन्हें साधुवाद संप्रेषित किया गया। उपस्थित पूर्व अध्यक्षों ने अपने वक्तव्यों के दौरान वर्तमान कार्यकारिणी को बधाई दी। उद्घाटन समारोह के साथ-साथ क्लिनिक में एक निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर भी आयोजित किया गया, जिसमें उपस्थित लोगों को मुफ्त डॉक्टरी परामर्श और दवाइयाँ वितरित की गईं। कार्यक्रम में सुरेश संचेती, सलाहकार दीपक साँखला, साहित्य प्रभारी प्रकाश दुगड़ और आईटी प्रभारी प्रांजल दुगड़ सहित कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

भक्ति संध्या का आयोजन

भीलवाड़ा।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम भीलवाड़ा, के तत्वावधान में टाउन हॉल, नगर निगम में राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत की अध्यक्षता में एक भव्य भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें संघगायक कमल सेठिया के सुमधुर भजनों ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने टीपीएफ के राष्ट्रीय कार्यक्रमों को विस्तृत जानकारी दी। टीपीएफ भीलवाड़ा के अध्यक्ष प्रशांत सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर टीपीएफ के राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं स्थानीय पदाधिकारी, महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना की चेयरमैन रितु चोरड़िया आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ भीलवाड़ा टीपीएफ मेंबर्स द्वारा टीपीएफ गीत से किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में सहाड़ा विधायक लादूलाल पितलिया, महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, अभातेममं की महामंत्री नीतू ओस्तवाल, मेवाड़ कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष बलवंत रांका, भीलवाड़ा सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया के साथ स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारी सहित चिकित्सा, उद्योग और समाजसेवा से जुड़े अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रायोजक बाबू लाल, मुकेश, प्रशांत सिंघवी का सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन भीलवाड़ा टीपीएफ मंत्री वरुण पितलिया और उपाध्यक्ष सपना कोठारी ने कुशलता से किया।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली।

मुनि डॉ. अभिजित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद, दिल्ली द्वारा तेरापंथ भवन, मानसरोवर गार्डन में 'तेरापंथ धर्म के मौलिक सिद्धांत एवं आचार्य भिक्षु के विचार' विषय पर आधारित एक विशिष्ट 'भिक्षु दर्शन कार्यशाला' का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मानसरोवर गार्डन सभा के सभाध्यक्ष नरेंद्र पारख, मंत्री अजय रांका, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष राकेश बैंगानी सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सभी उपस्थितजनों ने तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु के विचारों एवं दर्शन को गहराई से जाना।

गुरुदेव द्वारा इंगित शनिवारीय सामायिक की सामूहिक साधना भी कार्यशाला के अंतर्गत की गयी। कार्यशाला को सफल बनाने में क्षेत्रीय संयोजक अरुण बुच्चा सहित क्षेत्र के समर्पित कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा।

कार्यक्रम का सफल संचालन सुनील छाजेड़ ने किया तथा आभार ज्ञापन निखिल भूतोड़िया द्वारा प्रस्तुत किया गया।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं स्वास्थ्य जागरूकता अभियान का आयोजन

गांधीनगर, बेंगलुरु।

तेरापंथ युवक परिषद, बेंगलुरु गांधीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर राजाजीनगर द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता अभियान का आयोजन बिन्नीपेट स्थित पार्क वेस्ट अपार्टमेंट में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

शिविर में 71 लाभार्थियों ने निःशुल्क थायराइड अथवा लिपिड प्रोफाइल जाँच का लाभ उठाया। महाप्रज्ञ मेडिकल के संयोजक तरुण पटावरी ने महाप्रज्ञ मेडिकल की विस्तृत जानकारी सभी के साथ साझा की। आयोजन में संयोजक रजत बैद, सह संयोजक विवेक मरोठी, तेयुप उपाध्यक्ष मनीष भंसाली, महाप्रज्ञ मेडिकल संयोजक तरुण पटावरी, कार्यकारिणी सदस्य विनोद कोठारी और संदीप चोपड़ा का सक्रिय सहयोग एवं श्रम नियोजित हुआ।

पार्क वेस्ट अपार्टमेंट एसोसिएशन द्वारा निःशुल्क स्थान प्रदान करवाने के लिए परिषद् ने उनका आभार व्यक्त किया।

समर्पण और समझदारी से सफल होता है दांपत्य जीवन

बीकानेर।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में किशनलाल बाफना के विशाल हॉल में 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्रीजी के सान्निध्य में दांपत्य शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। शिविर में दांपत्य जीवन को सुखद और संतुलित बनाने के उद्देश्य से अनेक प्रेरणादायक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। कार्यक्रम की प्रमुख आकर्षण रही बहनों द्वारा प्रस्तुत लघुनाटिकाएं — 'सत्वन्ती नार' एवं 'पत्नी हो तो ऐसी', जिन्हें उपस्थितजनों ने खूब सराहा। साध्वीवृंद द्वारा प्रस्तुत सुमधुर गीतों ने वातावरण को भावविभोर कर दिया।

साध्वी कुंथुश्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा, 'एक चक्के से गाड़ी नहीं चलती, एक हाथ से ताली नहीं बजती, और न ही अकेले किसी एक व्यक्ति से समाज बनता है। दांपत्य जीवन परस्पर सहयोग, समर्पण और समझदारी से ही सफल होता है।' उन्होंने संबंधों में मधुरता लाने हेतु अनाग्रह चेतना का विकास, समन्वय एवं संवेदनशीलता, तथा सहनशीलता व संवादिता जैसे सूत्र प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि इन मूल्यों को अपनाकर जीवन को शांति और सामंजस्य से भरा जा सकता है।

साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने दृष्टिकोण, व्यवहार और चरित्र जैसे तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित दांपत्य जीवन की विस्तृत व्याख्या की।

कार्यक्रम में महिला मंडल की अध्यक्ष दीपिका बोथरा, विनिता जैन, युवक परिषद अध्यक्ष अमित कोठारी ने भावाभिव्यक्ति के माध्यम से शिविर के महत्व को रेखांकित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन शांता भूरा ने किया। प्रतिभागियों को सम्मानित करने का दायित्व विनोद बाफना ने निभाया तथा अंत में रेणु बोथरा ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 जून - 15 जून, 2025

संबोधि

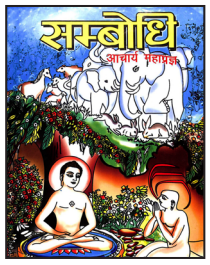

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लोगों ने पूछा-किसलिए? कहा-तुम्हारे धर्म के मध्य में ये दो महान् व्यवधान हैं। नरक का भय और स्वर्ग का प्रलोभन, व्यक्ति इन दोनों से मुक्त हो कर ही शुद्ध, सत्य धर्म का स्पर्श कर सकता है। दान के पीछे जो मानसिक भाव-दशा होती है, उसी को आधार मानकर ये भेद किए गए हैं। कामना से मुक्त होने के बाद जो प्रवृत्ति होती है, वह वास्तविक प्रवृत्ति होती है। उसमें कोई आकांक्षा-प्रत्याशा नहीं रहती। दान के साथ व्यक्ति को सीखना है-फलाकांक्षा और प्रत्याशा से मुक्त होने का पाठ। सहज कर्त्तव्य बुद्धि से कार्य करना एक सही कला है। इस कला में जो निष्णात होता है, वह फिर दुःखी नहीं होता।

प्राप्ति का मोह बड़ा जटिल होता है। प्रलोभन देकर आदमी से कुछ भी कराया जा सकता है। धर्म के नाम पर या धर्म होगा-बस इतना सुनना चाहिए, मनुष्य का मन द्रवित हो जाता है। लोभ का एक प्रकार नहीं है। वह जैसे धन का होता है वैसे स्वर्ग का भी होता है। दान के सभी प्रकारों से अवबुद्ध होकर व्यक्ति अपनी बुद्धि को भ्रमित न करे और यह भी न भूले कि जीवन का ध्येय है-समस्त आशंसा से मुक्त होना। अपने को केवल एक निमित्त समझना है। फलाकांक्षा और प्रत्याशा की भावना से मुक्त होने पर स्वयं को यह अनुभव होगा कि जो कुछ कर रहा हूं-वह कैसा है? स्वभाव की उपलब्धि वस्तुतः सबसे बड़ा दान है, जिसमें पर का विसर्जन स्वतः निहित है। स्व के अतिरिक्त फिर पकड़ या प्राप्ति का कोई प्रश्न ही नहीं रहता।

६०. धर्मो दशविधः प्रोक्तो, मया मेघ ! विजानता।
तत्र श्रुतञ्च चारित्रं, मोक्षधर्मो व्यवस्थितः।।

मेघ! मैंने दस प्रकार का धर्म कहा है-

१. **ग्राम**– धर्म-गांव की व्यवस्था-आचार-परम्परा।

२. **नगर**– धर्म-नगर की व्यवस्था-आचार-परंपरा ।

३. **राष्ट्र**– धर्म-राष्ट्र की व्यवस्था आचार-परंपरा ।

४. **पाषण्ड**– धर्म-विविध संप्रदायों द्वारा सम्मत आचार-व्यवस्था।

५. **कुल**– धर्म-कुल का आचार।

६. **गण**– धर्म-गण-राज्य की आचार-मर्यादा।

७. **संघ**– धर्म-संघ- गण समूह की सामाचारी-आचार-मर्यादा।

८,९. **श्रुत**– धर्म और चारित्र-धर्म-आत्म उत्थान के हेतुभूत धर्म, मोक्ष के साधक धर्म।

१०. **अस्तिकाय**– धर्म-पंचास्तिकाय का स्वभाव। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री चंपाजी (कंटालिया) दीक्षा क्रमांक 105

साध्वीश्री की तप में रूचि थी। आपके अन्त समय के तप का उल्लेख प्राप्त होता है जो इस प्रकार है– स. 1910 में 31, 1911 में 17, 1912 में 30, 1913 में 11 और 1916 में 9।

– साभार: शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

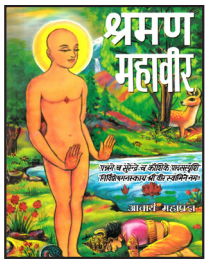

संघातीत साधना

एक बार भगवान् के श्रमण भिक्षा लेकर आ रहे थे। एक तपस्वी ने उनसे पूछा-

'तुम कौन हो?'

'हम साधु हैं।'

'इस पात्र में क्या है?'

'भोजन।'

'भोजन का संग्रह करते हो, फिर साधु कैसे? साधु को जो मिले वह वहीं खा लेना चाहिए। वह पात्र भर क्यों ले आए?'

'हम संग्रह नहीं करते, किन्तु यह भोजन बीमार साधु के लिए ले जा रहे हैं।' 'दूसरों के लिए ले जा रहे हो, तब तुम निश्चित ही साधु नहीं हो। यह गृहस्थोचित कार्य है, साधु-जनोचित कार्य नहीं है। यह मोह है।' 'यह मोह नहीं है, यह सेवा है।

भगवान् महावीर ने इसका समर्थन किया है। एक साधक दूसरे साधक की सेवा करे, इसमें अनुचित क्या है? इसे गृहस्थ-कर्म क्यों माना जाए?'

संघबद्ध रहना और परस्पर सहयोग करना, उस समय पूर्णतः विवाद रहित नहीं था। फिर भी भगवान् महावीर ने संघबद्ध साधना का मूल्य कम नहीं किया। साथ-साथ संघमुक्त साधना को भी पदच्युत नहीं किया। दोनों विधाओं के लिए भगवान् का दृष्टिकोण स्पष्ट था। उन्होंने कहा-

१. जिस साधक को सहयोग की अपेक्षा हो, वह संघ में रहकर साधना करे।

२. जिसमें अकेला रहने की क्षमता हो, वह एकाकी साधना करे।

३. संघ में निपुण सहायक उत्कृष्ट या समान चरित्र वाले साधक के साथ रहे। हीन चरित्र वाले साधक के साथ न रहे। निपुण सहायक के अभाव में अकेला रहकर साधना करे।

अतीत का सिंहावलोकन

इन्द्रभूति गौतम भगवान् महावीर के पास आए। वन्दना कर बोले- 'भंते! मैं भगवान् का वर्तमान देख रहा हूं। मेरा संकल्प है कि भविष्य में मैं भगवान् का वैसे ही अनुगमन करूंगा, जैसे छाया शरीर का अनुगमन करती है। किन्तु भंते! अतीत मेरे हाथ से निकल चुका है। मैं साधनाकाल में भगवान् के साथ नहीं रह सका। भंते! मैं उसे जानना चाहता हूं। यदि भगवान् को कष्ट न हो तो भगवान् मुझे उस समय के कुछ प्रयोगात्मक अनुभव सुनाएं।'

भगवान् ने स्वीकृति दी और वे कहने लगे 'गौतम! इन दिनों क्षत्रियों और ब्राह्मणों में प्रतिद्वन्द्विता चल रही है। मैं इसे समाप्त करना चाहता हूं। मैंने दीक्षित होते ही इस दिशा में प्रयत्न शुरू कर दिए। मैंने पहला भोजन ब्राह्मण के घर किया।' क्षत्रियों और ब्राह्मणों के समन्वय का मेरा यह पहला प्रयोग था।'

'गौतम ! मेरे प्रयोग की चरम परिणति तुम्हें पाकर हुई है। मेरे आसपास तुम सब ब्राह्मण ही ब्राह्मण हो। प्रतीत होता है अब वह प्रतिद्वन्द्विता अन्तिम सांस ले रही है।'

'भंते ! जातीय-समन्वय की दिशा में भगवान् का चरण आगे बढ़ा, उसका लाभ हमें मिला। हम भगवान् की शरण में आ गए। भंते! मैं जानना चाहता हूं, भगवान् के प्रयोगों से और भी बहुत लोग लाभान्वित हुए होंगे?'

(क्रमशः)

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

– आचार्य श्री महाश्रमण

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

विभिन्न विद्याओं का आकर शास्त्र

आगम-साहित्य के ग्यारह अंगों में पांचवां अंग है भगवई विआईपण्णती -भगवती व्याख्याप्रज्ञप्ति। इसका वर्तमान आकार अन्य आगमों की अपेक्षा अधिक विशाल है। यह तत्त्वज्ञान का कोष है। इसमें प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालने वाले सूत्र भी विद्यमान हैं। यह आगम संवादशैलीप्रधान अथवा प्रश्नोत्तरशैली प्रधान है। समवायांग और नन्दी के अनुसार इस आगम में छत्तीस हजार प्रश्नों का व्याकरण है। विज्ञान, मनोविज्ञान, परामनोविज्ञान, दर्शन, इतिहास आदि विभिन्न विषयों की चर्चा इसमें उपलब्ध है। कल्पना की जा सकती है कि इसका मूल नाम व्याख्या प्रज्ञप्ति है और अत्यन्त श्रद्धा के कारण नाम के साथ 'भगवती, विशेषण जुड़ गया। बोलचाल की भाषा में इसको भगवती नाम से भी जाना जाता है। विशेषण ने विशेष्य का स्थान ले लिया है। व्याख्या का अर्थ विवेचन और प्रज्ञप्ति का अर्थ है समझाना। जिसमें विवेचनपूर्वक तत्त्व को समझाया जाता है, वह है व्याख्याप्रज्ञप्ति। इस आगम का एक नाम व्याख्या भी मिलता है। इसके अध्यायों को शत (शतक) कहा जाता है। भगवती में मूल शतक ४१ हैं।

भगवती आगम-बत्तीसी में सबसे बड़ा आगम है। उसको पढ़ने से ऐसा लगता है कि इसमें सर्वाधिक प्रश्नकर्ता इन्द्रभूति गौतम, सर्वाधिक उत्तरदाता भगवान महावीर और सर्वाधिक प्रश्नोत्तर स्थल राजगृह है। विभिन्न प्रश्नोत्तरों का संकलन इस आगम के शतकों में किया गया प्रतीत होता है। इसका प्रारंभ मंगल से होता है। मंगल स्वरूप नमस्कार महामंत्र, ब्राह्मीलिपि व श्रुत को नमस्कार उल्लिखित है।

प्रश्नोत्तर की श्रृंखला में सबसे प्रथम है क्या चलमान चलित है? आदि। इसमें क्रियमाणकृत सिद्धान्त प्रतिपादित है। इस प्रकार विभिन्न प्रश्नोत्तरों से भरापूरा पहला शतक है। यह परिमाण में काफ़ी बड़ा है।

दूसरे शतक में परिव्राजक स्कन्दक का बहुत रोचक वर्णन है। गौतम और स्कन्दक का सौहार्दपूर्ण मिलन, स्कन्दक का भगवान महावीर के पास दीक्षित होना, अनशन स्वीकार करना तथा किस प्रकार का संयत जीवन स्कन्दक जीता है, उसका चित्रण बहुत प्रेरणाप्रद है। इसी शतक में उपलब्ध तुंगिया नगरी के श्रावकों का जीवन-वर्णन प्रत्येक श्रावक के लिए मार्ग-दर्शक है। शतक के दसवें उद्देशक में अस्तिकायों का वर्णन प्राप्त है। तीसरे शतक के प्रारंभ में अग्निभूति गौतम और वायुभूति गौतम भगवान महावीर से देवता संबंधी प्रश्न करते हैं और महावीर उनका उत्तर देते हैं। इसी शतक के दूसरे उद्देशक में बाल तपस्वी पूरण का वर्णन उपलब्ध है।

पांचवें शतक में अन्यान्य प्रश्नोत्तरों के साथ अतिसंक्षिप्त रूप में अतिमुक्तक मुनि की बालसुलभ चंचलता का वर्णन है। छठे शतक में तमस्काय और कृष्णराजि का प्रतिपादन भी प्राप्त होता है। सातवें शतक में अन्यान्य व्याख्या के साथ महाशिलाकंटक संग्राम और रथमुसल संग्राम का वर्णन मिलता है। आठवें शतक के अंत में जीव को पुद्गली और पुद्गल दोनों कहा गया है। नवें शतक में महावीर के मूल माता-पिता देवानन्दा ब्राह्मणी और ऋषभदत्त ब्राह्मण के बारे में भी जानकारी मिलती है। भगवान महावीर को देखने पर माता देवानन्दा का मातृस्नेह उमड़ पड़ता है, उसका सजीव चित्रण यहां मिलतां है। इसी शतक में महावीर के दामाद जमालि का वर्णन भी प्राप्त है। ग्यारहवें शतक में शिवराजर्षि और बारहवें शतक में महावीर के श्रावक 'शंख पोक्खली' का वर्णन मिलता है। जीव जगत की विविधता और विचित्रता का कारण कर्म है-यह घोष भी बारहवें शतक में प्राप्त है। स्याद् अस्ति, स्याद् नास्ति और स्याद् अवक्तव्य स्वरूप स्यादवाद के विश्लेषणात्मक सूत्र भी इस शतक में प्राप्त है। चौदहवें शतक में महावीर और गौतम के चिरकालीन संबंधों को जानकारी देने वाला एक सूत्र उपलब्ध है। पन्द्रहवें शतक में गोशालक का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस शतक का प्रारंभ **'नमो सुयदेवयाए भगवईए'** इस मंगल वाक्य से होता है।

खुले मुंह बोलने से वायुकाय की हिंसा होती है- इसका जो आगमिक आधार दिया जाता है, वह सोलहवें शतक में प्राप्त होता है। वहां इन्द्र की भाषा को सावद्य भी और निरवद्य भी बतलाया गया है। इसी शतक में स्वप्न और स्वप्नफल का वर्णन प्राप्त होता है।

अठारहवें शतक में कार्तिक सेठ का वर्णन प्राप्त है। राजगृह निवासी श्रमणोपासक मद्दुक ने अन्यतीर्थिकों को अस्तिकायों के बारे में समझाया। अमूर्त और अदृश्य का भी अस्तित्व होता है, इस बात को उसने अपने अकाट्य तर्कों से प्रतिपादित किया। भगवान महावीर ने उसकी प्रतिपादन-कुशलता की प्रशंसा की। यह सारा वर्णन भी अठारहवें शतक में उपलब्ध है।

बीसवें शतक में पांच अस्तिकायों के अभिवचन (पर्यायवाची नाम) काफी संख्या में मिलते हैं। चार वर्णवाला श्रमणसंघ भी इसी शतक में प्रज्ञप्त है। श्रमण, श्रमणी, श्रावक और श्राविका इन चारों को श्रमण संघ कहा गया है। पच्चीसवां शतक तात्त्विक ज्ञान का भण्डार है।

यह संक्षेप में भगवती का परिचयात्मक विश्लेषण है और पूर्ण पारायण की प्रेरणा है। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan
समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जून 2025
सप्ताह के विशेष दिन

18 जून
भगवान विमलनाथ निर्वाण कल्याणक

20 जून
भगवान नमिनाथ दीक्षा कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री सुखलालजी (गोगुंदा) दीक्षा क्रमांक 366

(क) घोर तपस्वी मुनिश्री सुखलालजी की तपस्या जन-जन को रोमांचित करने वाली थी। उन्होंने उपवास से लेकर 22 दिन तक (19 को छोड़कर) क्रमबद्ध तप किया। उनके तप का पूरा लेखा जोखा इस प्रकार है- उपवास/1953, 2/444, 3/471, 4/179, 5/105, 6/12, 7/12, 8/8, 9/7, 10/2, 11/1, 12/1, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1, 17/1, 18/1, 20/1, 21/1, 22/1, 31/1, 35/1, 36/1, 40/1, 44/1, 46/1, 51/1, 52/1, 54/1, 55/1 तथा भद्रोतर तप। तपस्या के कुल दिन- 6421 होते है जिनके 17 वर्ष 10 महिने व एक दिन हुआ। (क्रमशः)

- साभार: शासन समुद्र -

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 जून - 15 जून, 2025

आध्यात्मिक मिलन का भव्य कार्यक्रम

जसोल।

जसोल। ओसवाल भवन में साध्वी अणिमाश्रीजी, साध्वी सम्पूर्णयशाजी एवं साध्वी मेघप्रभाजी का त्रिवेणी संगम स्वरूप आध्यात्मिक मंगल मिलन का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। बालोतरा से समागत साध्वी सम्पूर्णयशाजी एवं साध्वी मेघप्रभाजी का स्वागत साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपनी सहवर्तिनी साध्वियों के साथ लगभग सवा किलोमीटर आगे जाकर भावपूर्ण रूप से किया। गीतों के माध्यम से दोनों ओर से प्रसन्नता का इज़हार हुआ। विनय और वात्सल्य के अद्भुत दृश्य को देखकर श्रावक समाज अभिभूत हो गया।

स्वागत समारोह में सभा को संबोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की मर्यादा और अनुशासन अद्वितीय है। एक गुरु के नेतृत्व के कारण तेरापंथ धर्मसंघ आज जिनशासन के नाम पर महासूर्य की तरह चमक रहा है। संघ में गुरु ही सबके प्राण, त्राण एवं सर्वस्व हैं। गुरु की दृष्टि की अखंड आराधना करने वाला शिष्य सफलता के शिखर पर आरोहण करता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें आत्मनिष्ठ, आगमनिष्ठ और आचरणनिष्ठ आचार्यश्री महाश्रमणजी का नेतृत्व प्राप्त हो रहा है। उनके सिंचन से संघ रूपी चमन की हर कली पुष्प बनकर सुवासित हो रही है। आज उसी चमन के दो महकते गुलाबों के रूप में साध्वी सम्पूर्णयशाजी एवं साध्वी मेघप्रभाजी का जसोल की धरती पर पादार्पण हुआ है। साध्वी सम्पूर्णयशाजी उत्साह की अपर पर्याय हैं। गणनिष्ठा, गुरुनिष्ठा और आचरणनिष्ठा का अनुपम संगम हैं। आपकी प्रमोद भावना देखकर मन प्रसन्न है। साध्वी मेघप्रभाजी ने समण श्रेणी में सैंतीस वर्षों तक रहकर देश-विदेश में यात्रा कर गण की गौरववृद्धि की है। समण श्रेणी की नियोजिका एवं प्रिंसिपल के रूप में सराहनीय कार्य किया है। अब अषाढ़ा का ऐतिहासिक चातुर्मास कर संघ की श्रीवृद्धि करनी है।

साध्वी सम्पूर्णयशाजी ने कहा कि हमारे शास्त्रों में चार प्रकार के फूलों का उल्लेख आता है, उनमें एक वह होता है जो सुंदर भी होता है और सुवासित भी। साध्वी अणिमाश्रीजी का व्यक्तित्व इसी श्रेणी का है – जिनका बाह्य व्यक्तित्व भी आकर्षक है और अंतरंग साधना से समृद्ध आंतरिक व्यक्तित्व भी अत्यंत प्रभावशाली है। आपके गुणों ने आपके व्यक्तित्व को संवारा और निखारा है। आपकी सरलता, विनम्रता, कर्मठता, स्वाध्यायशीलता और सेवाभावना ने आपके कद को बढ़ाया है। संघ में आपका विशेष नाम है। वर्षों बाद आपसे मिलकर आनंद की अनुभूति हो रही है। यह आनंद के पल हमारे जीवन के सृजन के पल बनें। साध्वी मेघप्रभाजी ने कहा कि साध्वी अणिमाश्रीजी मेक्रो टीचिंग और माइक्रो टीचिंग – दोनों में परिपूर्ण हैं। आपके भीतर हजारों व्यक्तियों को एक साथ संभालने की क्षमता है, तो सूक्ष्मता से तथ्य को एक-एक के हृदय तक पहुंचाने की दक्षता भी है। आप हमारे साध्वी समाज का गौरव हैं। कुछ व्यक्तियों का कर्तृत्व 50 वर्ष के बाद मंद हो जाता है, किंतु कुछेक ऐसे होते हैं जिनका कर्तृत्व उत्तरार्ध में और अधिक निखरता है। साध्वी अणिमाश्रीजी ऐसी साध्वी हैं – जिनका पूर्वार्द्ध भी कांतिमान था और उत्तरार्ध में भी उनका व्यक्तित्व और अधिक प्रकाशित हो रहा है। मेंटर, टीचर, प्रोफेसर आदि अनेक रूप आपके भीतर समाहित हैं। संघ-सूर्य की एक तेजस्वी रश्मि के दर्शन पाकर हम प्रमुदित हैं।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा कि तेरापंथ के चार-चार आचार्यों के श्रम-सिंचन से सिंचित जसोल की धरा पर यह त्रिवेणी संगम एक पुण्य अवसर है। डॉ. साध्वी भास्करप्रभाजी ने कहा कि हमारा यह मिलन न खजूर की तरह है, न संतरे की तरह – बल्कि चीकू की तरह है, जो बाहर और भीतर दोनों से एकरूप है।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशाजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने विभिन्न स्वर लहरियों में साध्वी वृन्द का स्वागत किया। साध्वी संवरविभा जी, साध्वी मौलिकप्रभाजी, साध्वी भास्करप्रभा जी, साध्वी साम्यप्रभा जी व साध्वी महकप्रभाजी ने मनभावन गीत प्रस्तुत किए। महिला मंडल ने भी गीत की प्रस्तुति दी। डूंगर सालेचा एवं पुष्पा बुरड़ ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने किया।

देदीप्यमान भास्कर हैं आचार्य श्री महाश्रमण

रामपुरा फूल।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन रामपुरा फूल में तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रवीण कुमार जैन ने स्वागत भाषण के साथ अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

नमस्कार महामंत्र के सम्मुचारण से प्रारंभ हुए इस अभिवंदना कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी रुचिप्रभा जी द्वारा किया गया। साध्वी मध्यस्थ प्रभा जी ने वक्तव्य के द्वारा पूज्यप्रवर के प्रति अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में आचार्य महाश्रमण जी की विशेषताओं को बताते हुए जीवन में गुरु के महत्व को रेखांकित किया। साध्वीश्री ने बताया भारत की संत परंपरा में आचार्य श्री महाश्रमण जी देदीप्यमान भास्कर, मानवता के मसीहा हैं।

बालक मोहन से युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण तक की उन्नत यात्रा का आधार है - गुरुद्वय के प्रति अनुत्तर समर्पण, विनयशीलता, कषाय निग्रह और अनुत्तर संयम साधना। स्थानीय ज्ञानशाला ने रोचक शब्दचित्र से अपनी अभ्यर्थना की।

अभिवंदना के स्वर में महावीर ढेलडिया (अहमदाबाद), विजयराज जैन (बठिंडा), राजीव जैन (बठिंडा), शशि रानी (रामपूरा फूल) आदि ने गीत, कविता और वक्तव्य के माध्यम से अपने भावों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी गौतमप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में स्थानीय श्रावक समाज के साथ जय तुलसी अणुव्रत पब्लिक स्कूल के अध्यापकों व तपामंडी, संगरूर व बठिंडा आदि क्षेत्रों के श्रावकों की अच्छी उपस्थिति रही।

एक साथ दो सीपीएस कार्यशालाओं का दीक्षांत समारोह आयोजित

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ युवक परिषद्, दिल्ली द्वारा आयोजित सात दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का दीक्षांत समारोह अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण और तेयुप दिल्ली के साथियों द्वारा विजय गीत की प्रस्तुति से हुई। सभा अध्यक्ष एवं आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री सुखराज सेठिया ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया और प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाएं हमारे व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध होती हैं। मुख्य अतिथि अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष एवं महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने अपने वक्तव्य में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी। साथ ही उन्होंने पब्लिक स्पीकिंग के मूल गुर साझा किए। उन्होंने सन् 2027 के गुरुदेव के चातुर्मास हेतु अधिकाधिक जुड़ाव का आह्वान भी किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अमित सेठिया ने तेयुप दिल्ली द्वारा एक ही समय में दो कार्यशालाएं सफलतापूर्वक आयोजित करने पर परिषद् को बधाई दी गयी और प्रतिभागियों को निरंतर अभ्यास करते रहने की प्रेरणा दी।

तेयुप दिल्ली अध्यक्ष राकेश बैंगाणी ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए परिषद् की गतिविधियों की जानकारी देते हुए CPS कार्यशाला को समाज के व्यक्तित्व विकास का एक प्रभावशाली माध्यम बताया। उन्होंने प्रशिक्षक मंडल –अविनाश जैन, आदित्य जैन और महावीर जैन – के शिक्षण, कौशल, समर्पण और धर्मसंघ के प्रति निष्ठा की सराहना की। साथ ही उदारमना आर्थिक सहयोगियों –केके जैन, उत्तम, नितेश छाजेड़, विमल, विवेक, विनीत महनोत का भी आभार प्रकट किया। रोहिणी सभा अध्यक्ष विजय जैन ने CPS कार्यशाला को अत्यंत उपयोगी बताते हुए कहा कि ऐसी कार्यशालाएं निरंतर होती रहनी चाहिए। रोहिणी सभा इसके लिए हमेशा तत्पर रहेगी। कार्यक्रम में रोहिणी क्षेत्र से निगम पार्षद अमृत लाल जैन की गरिमामय उपस्थिति रही। दिल्ली शाखा प्रभारी अंकुर लूणिया ने कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए दिल्ली परिषद् के साथियों के उत्साह और प्रयासों की सराहना की। सप्त दिवसीय कार्यशाला के प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर अपने वक्तृत्व कौशल का प्रदर्शन किया और अनुभव साझा किए।

उनकी प्रस्तुति के आधार पर 44 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और उपहार प्रदान किए गए। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद्, दिल्ली की पूर्व अध्यक्ष श्रृंखला, दिल्ली की विभिन्न संस्थाओं के सम्माननीय पदाधिकारीगण, तथा दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र से अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् से संबद्ध सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यशाला आयोजन में सौरभ जैन, मनीष जैन, नवीन जैन, युवा शक्ति और किशोर मंडल सदस्यों का श्रम रहा। कार्यक्रम का समापन तेयुप दिल्ली मंत्री मुदित लोढ़ा द्वारा आभार ज्ञापन के साथ हुआ।

साध्वियों का मंगल प्रवेश

धोलीपाल।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की महती कृपा से साध्वी सूरज प्रभा जी ठाणा-3 तेरापंथ भवन, धोलीपाल पहुंची। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा, 'व्यक्ति को जीवन में किसी भी प्रकार का व्यसन नहीं करना चाहिए। हम धोलीपाल में आप सबकी बुरी आदतें लेने और जीवन का सही मार्ग दिखाने के लिए आए हैं।' साध्वी डॉ. लावण्ययशा जी एवं साध्वी नैतिकप्रभा जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। तेरापंथ उपसभा धोलीपाल के संयोजक राजकुमार जैन ने साध्वीश्री का स्वागत करते हुए उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर आंचलिक अध्यक्ष जैन प्रकाश जैन, तेरापंथ सभा हनुमानगढ़ टाउन के अध्यक्ष संजय बांठिया, देव पॉलिटेक्निक कॉलेज के डायरेक्टर आनंद जैन, ऋषभ चौरड़िया, पंकज तातेड़, गोशाला अध्यक्ष राजेन्द्र गोदारा, कुलदीप नैण आदि ने भी साध्वीश्री के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए। इससे पूर्व साध्वीश्री ने ज्ञानदान स्कूल से भव्य स्वागत जुलूस के साथ तेरापंथ भवन धोलीपाल में प्रवेश किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप्प** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

त्रिदिवसीय ज्ञानशाला शिविर का हुआ भव्य आयोजन

बीकानेर।

'शासनश्री' साध्वी मंजूप्रभा जी एवं 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों हेतु त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। साध्वी कुंथुश्री जी ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि बच्चे देश की भावी पीढ़ी होते हैं। इनके समग्र विकास के लिए शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का रोपण अत्यंत आवश्यक है। आचार्य श्री महाश्रमण जी भी ज्ञानशाला के सतत विकास हेतु सदैव चिंतनशील रहते हैं। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों के चरित्र का निर्माण होता है। उन्होंने बच्चों को जीवन को श्रेष्ठ बनाने हेतु कई उपयोगी सुझाव भी दिए।

साध्वी सुमंगलाश्री जी ने कहा, 'ज्ञानशाला, आचार्य श्री तुलसी की दूरदर्शिता का साकार रूप है। वर्तमान युग में जहां पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, ऐसे समय में तेरापंथ धर्मसंघ जैसा मार्गदर्शक और ज्ञानशाला जैसी संस्कारपरक संस्था मिलना हम सबके लिए गर्व का विषय है।'

साध्वी जयंतप्रभा जी ने कहा, 'अभिभावक अपने बच्चों को कार दें या न दें, परंतु संस्कारों की कार अवश्य दें। जो व्यक्ति अनुशासन में रहता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त करता है।' साध्वी आलोकप्रभा जी एवं साध्वी सम्यक्त्वप्रभा जी ने ऐतिहासिक प्रसंगों और प्रेरणादायक कहानियों के माध्यम से जीवन विकास के सूत्रों को सरलता से प्रस्तुत किया। सभी ज्ञानार्थियों ने शिविर में अत्यंत उत्साह और सक्रियता के साथ भाग लिया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने पूरे मनोयोग, समय और श्रम से इस शिविर को सफल बनाने में योगदान दिया। शिविर के अंतिम दिन छोटे-छोटे बच्चों ने अपने कंठस्थ ज्ञान की सुंदर प्रस्तुति दी। बालिकाओं ने भवन में उपस्थित होकर 'भैया, मुँहपट्टी लगाना' मधुर कव्वाली का सरस संगान प्रस्तुत किया।

सुंदरलाल झाबक और पारस छाजेड़ ने अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति से बच्चों का उत्साहवर्धन किया। दीक्षा बैंगानी ने बच्चों को पेपर से फूल बनाना सिखाया, जिससे उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहन मिला।

शिविर की सफलता में ज्ञानशाला संयोजिका शांता भूरा, मुख्य प्रशिक्षिका नीतू रामपुरिया, कमला बैंगानी, अनुराधा बैंगानी, मोनिका बैद, सुचित्रा सोनावत, अलका नाहटा, चंद्रकला महात्मा, दीक्षा बैंगानी और सानवी गोलछा का विशेष योगदान रहा। समापन कार्यक्रम का कुशल संयोजन एवं आभार ज्ञापन मुख्य प्रशिक्षिका नीतू रामपुरिया ने किया।

आध्यात्मिक मिलन का आयोजन

कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली।

बहुश्रुत परिषद के सम्मानित सदस्य मुनि उदितकुमार जी आदि संतों एवं साध्वी कुन्दनरेखा जी आदि साध्वियों का आध्यात्मिक मिलन हीरालाल गेलड़ा के निवास स्थान में आनन्द के माहौल में हुआ। इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा - बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी मुनिश्री का जीवन विनम्रता और समर्पण की जीवंत निशानी है। आचार्य प्रवर के सह दीक्षित, मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी से दीक्षित, प्रशिक्षित मुनिश्री सरलता गंभीरता की मिसाल हैं। आज मुनिश्री से मिलकर मन हर्षित, प्रफुल्लित है क्योंकि मुनिश्री गुरुदेव से ऊर्जा प्राप्त कर संदेशवाहक के रूप में पहुंचे हैं। मुनिश्री अपनी कार्यशैली, प्रवचन शैली और प्रबंधन शैली से एक नया इतिहास रचेंगे - शुभ कामना। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने भी मुनिश्री के स्वागत में अपने विचार रखे।

बहुश्रुत मुनि उदितकुमार जी ने कहा - गुरुदेव की अनंत कृपा से लम्बा सफर कर हम दिल्ली पहुंच गए हैं।

मुनिश्री ने कलकत्ता निवासी दिल्ली प्रवासी गेलड़ा परिवार की सेवाओं का उल्लेख किया। जतन सेठिया और सरोज बाई सेठिया की सेवाओं की भी प्रसंशा की।

साध्वी कुन्दनरेखा जी के लिए मुनिश्री ने शीघ्र स्वास्थ्य लाभ लेकर लम्बे विहार करने की मंगलकामना व्यक्त की एवं साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत संदेशों का वाचन कर साध्वियों को समर्पित किया। इस अवसर पर हीरालाल गेलड़ा, राजेश गेलड़ा, सुखराज सेठिया, सुशील पटावरी, तेरापंथ महिला मण्डल साउथ दिल्ली एवं राजेश भंसाली ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन कुशलता पूर्वक शिल्पा वैद ने किया।

चरित्र निर्माण शिविर का हुआ आयोजन

बेंगलुरु।

शहर के गांधीनगर स्थित तेरापंथ भवन में साध्वी पावनप्रभाजी एवं साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत ज्ञानार्थियों का 4 दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 168 ज्ञानार्थी, शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं कार्यकर्ता संभागी बनें।

साध्वी पावनप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि, 'बच्चे हमारे संघ की नींव हैं, मूल हैं। चरित्र निर्माण शिविर के माध्यम से हम जड़ में पानी सींचने के लिए आए हैं। बचपन में दिए गए संस्कार पुष्ट बनते हैं, पुष्पित, पल्लवित एवं प्रफ्फुलित होते हैं।' सफलता के सूत्र बतलाते हुए साध्वीश्री ने कहा कि, 'लिफ्ट का रास्ता अपनाने से बेहतर है सीढ़ियों का रास्ता अपनाएं। मेहनत से ही सफलता प्राप्त होगी, इंस्टेंट सफलता की आशा न रखें। साध्वीश्री ने जैन तेरापंथी होने की महत्ता समझाते हुए भावी पीढ़ी को सही दिशा में रुझान रखने की प्रेरणा दी।

साध्वी पुण्ययशाजी ने कहा कि, 'चरित्र निर्माण शिविर, शिविरार्थियों को नैतिक मूल्य, अनुशासन और कर्तव्य बोध देने की प्रेरणा का एक उपक्रम है।' शिविर की महत्ता को समझाते हुए साध्वीश्री ने अभिभावकों को आह्वान किया कि वे अपने बच्चों को ज्ञानशाला में अवश्य भेजें जिससे उनका चहुंमुखी विकास होता है। साध्वी श्री ने बच्चों के आध्यात्मिक विकास हेतु अनेक छोटे-छोटे गुर बताए।

इस अवसर पर पहले दिन साध्वी संयमलताजी की सहवर्ती साध्वी मार्दवश्रीजी एवं साध्वी मनीषाप्रभाजी भी शांतिनगर से विहार कर कार्यक्रम में पहुंचे। साध्वी मार्दवश्रीजी ने संस्कारों एवं संस्कृति की सुरक्षा हेतु शिविरों को उपयोगी बताया। शिविरार्थियों का दिन सुबह 5 बजे सामायिक से शुरू होता। वृहद मंगलपाठ, प्रवचन के पश्चात जिज्ञासा समाधान के क्रम में कई बच्चों को अपने प्रश्नों का उत्तर मिला। दोपहर में एक घंटा प्रशिक्षकों की क्लास रहती, जिसके बाद एक घंटा उम्र के अनुसार वर्ग कर 6 कक्षाएं साध्वियों ने ली। साध्वीश्री ने उम्र के हिसाब से बच्चों के लिए आवश्यक विषय पर चर्चा करते हुए चारों ही दिन अनेक महत्वपूर्ण बातें बतलाई।

चार दिवसीय शिविर में शिविरार्थियों को गोचरी कराने का भी अवसर मिला। शिविर में बच्चों को साध्वियों से वार्तालाप करना, वंदना करना, उचित शब्दों का उपयोग करना आदि जानने का मौका मिला। इन चार दिनों में अनेक तरह की रोचक प्रतियोगिताओं की प्रस्तुतियां दी गई। 'प्रतिक्रमण - कब, कैसे और क्यों', 'छः काय', 'भविष्य कैसा हो' विषयों पर नाटिका की प्रस्तुति दी गई। इसके अलावा बच्चों ने अंताक्षरी, भाषण, क्विज प्रतियोगिता जैसे अनेक आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। शिविर के अंतिम दिन लगभग 14 बच्चों ने शिविर के अनुभवों को साझा किया। तेरापंथ सभा, गांधीनगर बैंगलोर के अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़ एवं सभा परिवार का पूर्ण सहयोग रहा। शिविर संयोजक जुगराज श्रीश्रीमाल और गौतम डोसी रहे। समण संस्कृति संकाय के केंद्रीय व्यस्थापक कमलेश पितलिया ने अपना पूरा समय शिविर के सुचारू प्रबंधन के लिए नियोजित किया। शिविर में विशेष श्रम हेमंत छाजेड़ का रहा। इस अवसर पर बच्चों के अभिभावकों सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
09 जून - 15 जून, 2025

साध्वीश्री कीर्तियशाजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

अध्यात्म जगत की जागरूक साधिका – साध्वी कीर्तियशाजी

● साध्वी मल्लिकाश्री ●

जीवन जीने की कला का मूल्य है, तो मरने की कला का इससे कई गुना अधिक मूल्य है। अतः कहा गया – 'मनखां मोटी बात मरणो जाणसी'। जैन दर्शन में इस कला को संथारा यानि समाधि मरण की संज्ञा दी गई है। अनशनपूर्वक देह त्याग मृत्युंजयी बनने की सुंदर प्रक्रिया है। इस समाधि मरण की साधना को आत्मसात् करने वाली कोई पुण्यात्मा ही हो सकती है।

ऐसी ही तेजस्वी, संयमी, पराक्रमी, आत्मार्थी, निर्जारार्थी, साहसी आत्मा थीं – साध्वी कीर्तियशाजी। जिन्होंने अपनी असह्य वेदना में भी बढ़ते-चढ़ते परिणामों को साधा। आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार, उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमलकुमारजी के मुखारविंद से तिविहार-अनशन पूर्ण जागरूकता के साथ स्वीकार कर, अद्वितीय शौर्य का परिचय दिया।

आप आचारनिष्ठ व संघनिष्ठ साध्वी थीं। आपकी हर कार्य में सुघड़ता, कार्यकुशलता, गंभीरता, सहिष्णुता आदि तत्वों ने आपको तेजस्वी बनाया। पंचाचार का पीयूष पीकर संयम-साधना को परिपुष्ट किया। आपने अपने दायित्व का निर्वहन बड़ी प्रखरता के साथ किया। विचारों, व्यवहारों और कार्यों में संतुलन बनाए रखना आपकी विशेषता थी। अपनी सकारात्मक सोच द्वारा आपने जीवन के हर कोण में सफलता का वरण किया।

आपने अपनी प्रबल इच्छाशक्ति एवं संकल्पशक्ति के साथ विलक्षण सहिष्णुता व समता की संपदा का अखंड खज़ाना हस्तगत कर लिया। शारीरिक असह्य वेदना में भी आपकी तप, जप, आगम स्वाध्याय व साधना के प्रति पूर्ण सजगता, स्वाध्याय में कायिक स्थिरता एवं सात्त्विक प्रसन्नता से आपको भवित देखा। आपने संयमरत्न की चमक को और अधिक शतगुणित कर जीवन के समरांगण में महायोद्धा बनकर, कर्म रिपुओं को परास्त कर, सिद्धपुर की ओर प्रस्थान कर दिया।

मैंने बारीकी से आपके जीवन को देखा। आप में आचार-विचार के प्रति इतनी अधिक जागरूकता थी कि किसी भी कार्य को करते समय कहतीं – 'कहीं मुझे पाप न लग जाए।' साधुत्व के प्रति बेजोड़ आस्था थी और आगम स्वाध्याय तो जैसे आपके रोम-रोम में बसा हुआ था। मैंने अनुभव किया कि आगम आपके अवचेतन मन तक उतरा हुआ था।

आर्षवाणी में कहा गया है – 'समया धम्म मुदाहरे मुणि'। भगवान महावीर ने समता को धर्म बताया है। मुझे ऐसा लगा कि आपने भगवान महावीर की इस वाणी को अपने जीवन का ध्येय बना लिया था। तभी इतनी भयंकर वेदना में भी आपका समताभाव अविचल रहा। मुझे लंबे समय तक आपके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यदि यह भी कह दूं कि आप समता की प्रतिमूर्ति थीं, तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

हे सतीवरा! नमन है आपके धृतिबल को, नमन है आपके मनोबल को, और नमन है आपके आत्मबल को एवं साहसिक निर्णय को। आपने 'अप्पाण मेव जुज्झाइ', 'समयं गोयम मा पमायए' – भगवान महावीर की वाणी को आत्मसात कर, हर पल अप्रमत्तता का जीवन जिया। एक वीर योद्धा की तरह आत्मविजय का कवच पहनकर अभ्युदय का मार्ग लिया। आपकी भावधारा की पवित्रता को देखकर सात्त्विक आह्लाद की अनुभूति हो रही है। गुरुदेव की असीम अनुकंपा ने आपको अंतिम मनोरथ पूर्ण करवा कर भवसागर से पार पहुँचाया है।

आपका मेरे जीवन में अनन्य उपकार है। मेरे जीवन में अनेक संघर्ष आए, किन्तु आपने मातृवत वात्सल्य देकर स्थिर रखा। कभी डोलायमान नहीं होने दिया और साधना के गुर बताती रही और मेरे मार्ग को प्रशस्त करती रहीं और सदैव मुझे अपने साथ बांधे रखा। समय-समय पर असीम वात्सल्य बरसाती रहीं और मुझे नया करने के लिए प्रेरित करती रहीं।

अपने निपुण साहचर्य से मेरी जिंदगी में समरसता घोलकर, व्यावहारिक शुभ गुणों व संस्कारों का सिंचन कर आपने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मेरे प्रत्येक कार्य में पूरक बनकर आपने हर पल मेरा सहयोग किया, जो मेरे जीवन के लिए अविस्मरणीय है।

मैं आपको एक क्षण के लिए भी विस्मृत नहीं कर सकती। भले ही आप विलीन हो गई हैं, लेकिन भावों में, मेरे स्मृति-पटल पर आप सदैव अमर रहेंगी। आत्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, संघनिष्ठा, आगमनिष्ठा – आपकी ये दुर्लभ विशेषताएं मुझमें भी संक्रमित होती रहें।

कहा गया है –

"जिंदगी एक राहगुज़र है, राही आते हैं, चले जाते हैं,
कोई विरले राही होते हैं, जो यादों में बस जाते हैं।"

अंत में, इस दिव्य आत्मा के प्रति यही आध्यात्मिक मंगल कामना करती हूं – आपकी आत्मा ऊर्ध्वगमन करती हुई, अतिशीघ्र मोक्षश्री का वरण करे।

अध्यात्म जगत की जागरूक साधिका व श्रुत आराधिका को नमन, नमन, नमन।

अध्यात्म चेतना के उन्नयन का नाम है साध्वी कीर्तियशा

● साध्वी अणिमाश्री ●

कहते हैं, जीवन में आपसे कौन मिलेगा — यह समय तय करेगा। जीवन में आप किससे मिलेंगे — यह आपका दिल तय करेगा, पर जीवन में आप किन-किन के दिल में बने रहेंगे — यह आपका व्यवहार तय करेगा। व्यक्ति का व्यवहार ही उसे ऊँचाई तक पहुँचाता है।

परमपूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद व कृपा से अणुप्रत भवन, दिल्ली में साध्वी कीर्तियशाजी हमारे साथ भिन्न समाचारी में रहीं। जिंदगी में पहली बार उन्हें निकट से देखने का अवसर मिला। उनकी सहजता, सरलता, पापभीरुता मन को आकर्षित करने वाली थी। उनके चेहरे की प्रसन्नता व निर्मलता देखकर कोई भी यह अंदाज़ नहीं लगा सकता था कि वे असाध्य बीमारी से ग्रस्त हैं। उनकी आध्यात्मिक चेतना का उन्नयन ही उन्हें आध्यात्मिक चिकित्सा के लिए उत्प्रेरित कर रहा था। उनका मधुर व्यवहार और अच्छा स्वभाव हर व्यक्ति के मन में सम्मानपूर्ण स्थान बनाने जैसा था। उनकी भेदविज्ञान की साधना ने उन्हें अभय बना दिया — ऐसा हमें उन चार दिनों के सह-प्रवास में अनुभव हुआ।

उनकी अपने आचार एवं संयम के प्रति सजगता, गुरु एवं गण के प्रति निष्ठा अभिनंदनीय थी। वेदना में प्रवर्धमान उनकी समता देखकर मन गद्गद् हो गया। जब भी उनसे बात हुई, तब लगा कि उनकी सोच सकारात्मक है और शब्द-शब्द में गुरुदेव के प्रति अहोभाव के साथ कृतज्ञता सूचक भाव उनकी विनम्रता और सहज समर्पण को प्रकट कर रहे थे।

जब हमने सुना कि पूर्ण सचेतन अवस्था में गुरु आज्ञा से उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी से तिविहार अनशन स्वीकार कर लिया है — सचमुच मृत्युंजय पथ पर अपने चरणों को गतिमान करके उन्होंने मृत्यु को महोत्सव बनाकर स्वयं को धन्य बना लिया। साध्वी मल्लिकाश्रीजी का प्रारंभ से अंतिम श्वास तक आत्मीय सहयोग मिला। दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक विकास की मंगल कामना।

प्राप्त करो निर्वाण

● मुनि कमल कुमार ●

यथा नाम गुण भी तथा, जन-जन रहा निहार।
कीर्तियशाजी ने किया, सचमुच दुक्कर कार।।

संथारा स्वीकार कर, किया है अनुपम काम।
आत्मा के उत्थान सह, किया संघ में नाम।।

आदि अंत में मिल गया, जन्म भूमि का योग।
देख आपकी साधना, प्रमुदित हैं सब लोग।।

तुलसी युग दीक्षा ग्रही, रूं रूं नव उत्साह।
महाश्रमण युग में चली, पा सबसे वाह-वाह।।

मल्लिकाजी का मिला, सुगुरू कृपा से साथ।
विशद लब्धि आदिक ने, खूब बटाया हाथ।।

परिकर को भी मिल गया, सेवा का आनंद।
फैली सेवा केन्द्र की, चहुं दिशि सुयश सुगंध।।

स्मृति सभा में कर रहे, हदय खोल गुणगान।
क्रमशः करके साधना, प्राप्त करो निर्वाण। ।।

दीपै संथारो

● साध्वी प्रबलयशा ●

दीपै संथारो, दीपै संथारो, दीपै संथारो।
थे तो जबरी हिम्मत धारी, कीर्तियशाजी हिम्मतधारी,
जावां म्हे सगळा बलिहारी, लागी शिवसुख स्यूं इकतारी।।

साहस स्यूँ पचख्यो संथारो, चमक्यो देखो भाग्य सितारो।
सार्थक बणग्यो जीवन थांरो।।

थारां मनोरथ तीनूं फलग्या, समता शिखरां पर थे चढ़ग्या।
थे तो भवसागर स्यूं तरग्या।।

थांरी सहिष्णुता नरमाई, मितभाषी मृदु व्यवहारी।
बनी अनासक्ति वरदाई।।

गुरु त्रय री कृपा पाई, गण गरिमा ने खूब बढ़ाई।
दीपै संथारो सुखदाई।।

निर्मोही निश्छल जीवन, रह्या अप्रमत्त थे क्षण-क्षण।
ऊंचा भावस्यूं लीनो अनशन।।

भागां स्यूं भैक्षव संघ पायौ, मिलग्यो महाश्रमण रो सायो।
दीज्यो साझ सबाने सवायो।।

मल्लिकाजी साझ दिरायो, सच्चा साथी रो फर्ज निभायो।
सुखद सेवा रा मेवा पाओ।।

लय - धरती धोरां री

जीवन चमकाया है

● साध्वी कल्पमाला ●

संयम की साँसों से जीवन चमकाया है।
गुरु निष्ठा, संघनिष्ठा से जीवन महकाया है।।

गंगाणे की लाडली तुम, गण बगिया में खिली,
तुलसी कृपा को पाकर संयम में हरपल रमी।
तेरी जीवन गाथा का, गुण गौरव गाते हैं।।

सहज सरल जीवन तेरा, वाणी रही मधुर,
समत्व शिखर पर आरूढ चेतना के झंकृत स्वर।
अद्भुत व्यवहार कौशल, सबको लुभाते हैं।।

संयम यात्रा ग्रहण करके तुमने, की संघ प्रभावना,
श्रम बूंदो से सिंचित जीवन, गुरु इंगित आराधना।
'शासनश्री' बसन्तप्रभा जी, मंगल भाव सजाते हैं।।

श्रम के महादेवता आचार्य महाश्रमण जी

जसोल।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में गणमहानायक आचार्य श्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में स्थानीय ओसवाल भवन में आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी अपने उद्बोधन में कहा - नमन करती हूं मां नेमा की रत्नकुक्षि को जिन्होंने तेरापंथ के कोहिनूर को जन्म दिया। जिनका बचपन संयम के परमाणुओं से प्रभास्वर बना एवं आज के दिन गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी से संयम रत्न प्राप्त किया।

वे प्रारम्भ से ही आचारनिष्ठ, मर्यादानिष्ठ, अनुशासन निष्ठ मुनि के रूप में विख्यात हुए। उनके शरीर के रोम-रोम में संयम का मजीठी रंग चढ़ा हुआ था। आज वो ही मुनि मुदित संघ का नाथ बनकर संयमी आत्माओं के संयम को सम्पुष्ट बना रहा हैं। जो युगधारा में नए प्राणों का संचार करता है, वह युवा होता है, आचार्य महाश्रमण जी नवयुग मे नवप्राणों का संचार कर रहे है, वे श्रम के महादेवता हैं, उत्साह के पारावार हैं, इसलिए युवा हैं। पूज्य प्रवर का युवकत्व सदैव वर्धमान रहे, आपकी शासना में संघ की तेजस्वता निश दिन अभिवर्धित होती रहे। साध्वीश्री ने श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री जी के चयन दिवस पर भावों का श्रद्धा उपहार समर्पित किया।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा - मुनि मुदित वो भाग्यशाली संत था, जिन्हें दो-दो महान शिल्पकार आचार्यों ने तराशा है।

वो अनुपमेय कृति संघ मंदिर में प्रतिष्ठित होकर संघ की शोभा बढ़ा रही है। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा - आज के दिन तेरापंथ धर्मसंघ में महायोगी, महाध्यानी, युगदृष्टा, युगसृष्टा, महानायक, आचार्य महाश्रमण जी का मुनि मुदित के रुप में जन्म हुआ। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व, नेतृत्व बेमिसाल है। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि आचार्य महाश्रमण जी हैप्पी मेन, हेल्दी मेन एवं हम्बल मेन हैं। उससे पहले ज्ञानशाला के बच्चों ने मंगल संगान किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी, तेयुप अध्यक्ष मनीष बोकड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष कंचनदेवी ढ़ेलडिया, हनुमान चन्द लुंकड़, लीला देवी सालेचा ने भावाभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल ने सुमधुर गीत का संगान कर वातावरण को मधुरिमा प्रदान की।

'महाश्रमण अभिवंदना' में भक्ति, श्रद्धा और संगीत का संगम

बेंगलुरु।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के अवसर पर अभातेयुप के निर्देशन में, तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु द्वारा 'महाश्रमण अभिवंदना' नामक आध्यात्मिक संध्या का आयोजन गांधीनगर स्थित तेरापंथ सभा भवन में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनि डॉ. पुलकितकुमार जी के मंत्रोच्चार एवं स्वरबद्ध भजनों से हुई। प्रमुख भजन प्रस्तुतियों में मनीष पगारिया (बेंगलुरु), खुशी कठोतिया (हैदराबाद) एवं प्रज्ञा संगीत सुधा मंडली की संगीतमय प्रस्तुति ने सभी को भावविभोर कर दिया।

तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल सहित सम्पूर्ण कार्यकारिणी, महासभा आंचलिक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, महिला मंडल अध्यक्षा रिजू डूंगरवाल, टीपीएफ अध्यक्ष पुष्पराज सहित विभिन्न संघीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं श्रद्धालुओं की उपस्थिति ने आयोजन को भव्यता प्रदान की।

भक्ति संध्या में मैना देवी–एम.सी. बलदोटा, संतोष देवी–कन्हैयालाल चिप्पड़ का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन अश्विन धारीवाल ने किया।

महाश्रमण अभिवंदना व युवा दिवस कार्यक्रम सम्पन्न

गुवाहाटी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तथा तेरापंथ युवक परिषद, गुवाहाटी के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल पर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के 52वें दीक्षा दिवस के अवसर पर महाश्रमण अभिवंदना एवं युवा दिवस कार्यक्रम श्रद्धा एवं उत्साह के साथ आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र एवं महाश्रमण अष्टकम् के संगान से हुई। तेयुप अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी ने स्वागत वक्तव्य में आचार्य श्री को महान संत, तपस्वी, विद्वान एवं मानवता के पुजारी बताते हुए उनकी साधना और उपदेशों को प्रेरणास्रोत बताया।

कार्यक्रम में मुख्य गायक कलाकार विनीत चिंडालिया ने एक से बढ़कर एक सुमधुर भजनों के संगान से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

विजय कुमार चोपड़ा, राजकुमार बैद, सुनीता गुजरानी, संतोष पुगलिया, और बजरंग बैद आदि ने गुरुदेव के प्रति अपने भाव प्रकट किए और उन्हें वीतरागता व साधना का प्रतीक बताया। बबीता पटवा और मनोज छाजेड़ ने सुमधुर भजनों का संगान किया। तेयुप कार्यकारिणी सदस्य आकाश जम्मड़ के निर्देशन में ज्ञानशाला के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत लघुनाटिका 'वीतराग पथ : मोहन से मुदित की यात्रा' को सराहना मिली।

भारती देवी महनोत ने आचार्यश्री के आध्यात्मिक जीवन पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाश्रमणगुरवे नमः' का सामूहिक जप हुआ।

इस अवसर पर महाश्रमण आर्ट गैलरी के प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। संचालन पंकज सेठिया और आभार ज्ञापन मुकेश बरड़िया ने किया।

अध्यात्म का प्रथम सोपान है - प्रेक्षाध्यान

हिमायतनगर, हैदराबाद।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाश्रमणजी के जीवन के तीन महत्वपूर्ण अवसरों जन्मोत्सव, दीक्षा महोत्सव एवं पट्टोत्सव से प्रेरित होकर प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा निर्देशित प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज दुनिया सौंदर्य, सत्ता और संपत्ति के पीछे भाग रही है और तनावों से जूझ रही है। उसका एकमात्र समाधान है -प्रेक्षाध्यान। आज व्यक्ति के पास अपने लिए समय ही नहीं है। प्रेक्षाध्यान स्वयं के द्वारा स्वयं की पहचान और शांति का आधार है। अतः हर मनुष्य को अपने जीवन में प्रेक्षाध्यान जरूर अपनाना चाहिए। साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। साध्वी मयंकप्रभा जी ने श्रावक-श्राविकाओं को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। इस कार्यशाला में प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक रीता सुराणा और साउथ जोन की को-ऑर्डिनेटर प्रशिक्षक डिंपल बैद एवं साधकों के साथ कुल 50 व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संयोजन प्रेक्षावाहिनी संवाहक प्रेम संचेती एवं आभार ज्ञापन सह-संवाहक अंजू गोलछा ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

मित बोलने वाला...

जितना अपेक्षित हो, उतना ही बोलें; अनपेक्षित न बोलें। यह संयम, धर्म और व्यवहार की दृष्टि से अच्छा हो सकता है। बोलो तो मीठा बोलो – 'कागा काहे को लेत है, कोयल काहे को देत। एक वचन के कारणे, जग अपना कर लेत।' खुद को बदलो, जग बदलेगा। आप भले होंगे तो जग भी भला होगा।

बड़ों के साथ विनयपूर्वक व्यवहार हो, तो अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। सोच-विचार कर बोलें – 'भाषा तोलणी ए, पछे बोलणी ए।' बुद्धि से समीक्षा कर बोलें। कहां क्या बोलना है, इसका विवेक हो।

अच्छाइयों को आम लोगों को बताया जा सकता है, पर बुराइयों को व्यक्तिगत रूप से बताएं। पूज्यप्रवर ने आगे फरमाया– "आज हमारे मुख्य मुनि महावीरकुमारजी का 38वां जन्मदिन है। आज ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी, श्रुत पंचमी का दिन भी है – ज्ञान का विकास हो और जो श्रुत है, वह बहुश्रुत हो जाए। इन्हें श्रेष्ठ श्रुताराधक की डिग्री भी मिली हुई है।"

बहुश्रुत परिषद के संयोजक भी हैं। पात्रता हो तो कुछ भी ग्रहण किया जा सकता है। साधना के साथ-साथ स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखें। खूब सेवा और परिश्रमशीलता का क्रम बना रहे।' पूज्यवर के स्वागत में विद्यालय की ओर से प्रिंसिपल कनुभाई परमार ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पृष्ठ 16 का शेष

ज्ञान और प्रत्याख्यान से...

विद्यालयों में शिक्षा के साथ नैतिकता, ईमानदारी, अहिंसा और नशामुक्ति के भाव भी सिखाए जाने चाहिएं। अच्छे संस्कारों से सुसज्जित बच्चे ही उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। जीवन विज्ञान के माध्यम से सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास संभव है। पूज्यवर ने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए सूत्र रूप में प्रेरणा दीः 'अच्छा सोचें, अच्छा देखें, अच्छा सुनें, अच्छा बोलें और अच्छा करें, तो जीवन अच्छा हो सकता है।'

पूज्यवर के स्वागत में भार्गव चावत, अनिता छाजेड़, डॉ. दिव्य शाह, उमा चावत, मुस्कान जैन, बालक विधान भंसाली व भव्य शाह, मोनिका हिरण, विद्यालय उपप्रमुख हरिभाई पटेल, नगरपालिका अध्यक्ष नीरजभाई शेठ आदि ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं। भंसाली व चावत परिवार के सदस्यों ने अपनी प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 जून - 15 जून, 2025

जीव की मोक्ष यात्रा

(युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के दिनांक 19 मई 2025 का मुख्य प्रवचन)

आर्हत् वाङ्मय में कहा गया है – मैं कौन हूं? यह एक प्रश्न है। यह प्रश्न कोई भी आदमी स्वयं के लिए उठा सकता है कि मैं कौन हूं? यह जो मेरा शरीर दिखाई दे रहा है, वही मैं हूं या और कोई चीज में मैं हूं। इस प्रश्न का उत्तर अध्यात्म के प्रवक्ता के द्वारा दिया जा सकता है।

एक साधु के पास कोई लड़का आया और बोला – मुनिवर! मन में प्रश्न है कि मैं कौन हूं?

संत ने कहा – इसका उत्तर है कि मैं आत्मा हूं, यानी तुम आत्मा हो, जीव हो, चैतन्यवान हो।

लड़के ने पूछा – ये हाथ-पांव, सारा शरीर, केश आदि क्या यही जीव है?

संत ने कहा – यह जो दिखाई दे रहा है वह तो अजीव है, पुद्गल पिंड है। यह तुम मूलतः नहीं हो। तुम आत्मा हो, जीव हो। यह जो शरीर है, यह मूलतः अजीव है। अभी जीव और अजीव मिले हुए हैं, पर यह शरीर अपने आप में पुद्गल है, अजीव है और तुम जीव हो, आत्मा हो।

लड़के ने फिर प्रश्न किया – मैं जीव और यह शरीर अजीव है, फिर मेरा और इस पुद्गल पिंड का मिलन या मिश्रण कैसे हुआ? यह मेरे साथ-साथ क्यों चल रहा है? मैं तो यह शरीर हूं नहीं, मैं तो आत्मा हूं। फिर मैं जीव, यह अजीव, हम दोनों का साथ कैसे हो गया?

तब संत ने कहा – यह पुण्य-पाप का योग है कि शरीर का भी तुम्हें सहयोग मिल गया।

प्रश्न हुआ – ये पुण्य-पाप क्यों आ रहे हैं?

संत ने कहा – बंध नाम का एक तत्व है। तुम्हारे कर्म बंधे हुए हैं। वे पुण्य या पाप के रूप में उदय में आ रहे हैं।

लड़के ने कहा – आपने जीव बता दिया, अजीव बता दिया, पुण्य-पाप बता दिए, बंध बता दिया, तो मेरी जिज्ञासा और आगे बढ़ गई है कि यह कर्मों का बंध होता क्यों है? कर्मों का बंध कराने वाला कौन है?

संत ने कहा – एक आश्रव नाम का तत्व है। जीव के द्वारा शुद्ध-अशुद्ध परिणाम रूप प्रवृत्ति की जाती है, वह आश्रव है। उससे यह कर्मों का आकर्षण होता है, बंध होता है।

लड़के ने कहा – महाराज! आपने आश्रव की बात बताई। मैंने समझने की चेष्टा भी की है, तो मुझे यह लगा कि सारे दुखों का, पापों का, पुण्य का मूल तो आश्रव है और शरीर का यह सहयोग भी आश्रव के कारण है। यह आश्रव तो एक समस्या है। इससे कर्मों का बंधन होता है, फिर ये कर्म भोगने पड़ते हैं। मुनिवर! आपने समस्या तो बता दी, अब इसका कोई समाधान भी है या नहीं? इन कर्मों के आगमन का जो यह कारण आश्रव है, इसको रोकने का या खत्म करने का कोई उपाय भी है क्या?

संत ने कहा – समस्या मैंने बताई है तो समाधान भी मैं बता सकता हूं। वह है संवर। संवर की साधना करो। सामायिक करना भी संवर है, और भी त्याग, प्रत्याख्यान करना, मिथ्या दृष्टिकोण का परित्याग करना, छोड़ देना – यों अनेक रूपों में संवर हो सकता है। संवर के मुख्यतः पाँच भेद हैं – सम्यक्त्व संवर, विरक्ति संवर, अप्रमाद संवर, अकषाय संवर, अयोग संवर।

संवर हो जाएगा तो आश्रव नहीं रहेगा। **"संवरो मोक्ष कारणं"** – अर्थात् संवर मोक्ष का कारण है। संवर, आश्रव की समस्या का समाधान है।

लड़का भी बड़ा बुद्धिमत्ता से बात कर रहा था – महाराज! मेरे मन में एक और प्रश्न पैदा हो गया। आपने जैसा कहा कि संवर हो जाएगा तो आश्रव नहीं रहेगा, कर्म नहीं बंधेंगे। ठीक है, मैं संवर कर लूंगा, तो नए सिरे से कर्म नहीं बंधेंगे, पर पहले से जो कर्म बंधे हुए हैं, उनको निकाले बिना वे अपना काम करते रहेंगे। वे रहेंगे, तब तक फिर यह शरीर चलता रहेगा। इसलिए पहले से जो अर्जित कर्म हैं, बंध हैं, उनको निकालने का कोई उपाय है क्या?

संत ने कहा – निर्जरा नाम का एक तत्व है, जिससे पुराने बंधे हुए कर्मों को तपस्या के द्वारा तोड़ा जा सकता है। नए सिरे से आने का क्रम बंध हो गया संवर से, और पुराने कर्मों को आंशिक रूप से निकालने का काम है – निर्जरा का।

लड़के को काफी संतोष मिला कि नए सिरे से कर्म न आए वह उपाय भी मुनिजी ने बता दिया, और पुराने कर्मों को निकालने का उपाय भी बता दिया।

लड़का बोला – महाराज! निर्जरा मैं कर लूंगा, संवर भी करूंगा, फिर तो सारी समस्या का समाधान हो जाएगा न?

संत बोले – फिर तो मोक्ष मिल जाएगा। फिर शरीर रहेगा ही नहीं, केवल तुम – यानी आत्मा – रहोगे। मोक्षावस्था में सर्वकर्मविप्रमुक्त अवस्था जीव की हो जाएगी। फिर नए सिरे से न कर्म है, न जन्म है, न मरण है, न मन है, न वाणी है। एकदम निरंजन, निराकार, अयोग अवस्था रूप में आत्मा रहेगी।

लड़का बोला – आपने थोड़े में मुझे बहुत ज्ञान दे दिया, मोक्ष तक की बात बता दी। महाराज! आपने जो यह दर्शन बताया है, इसके मूल प्रवक्ता कौन हैं?

मुनिजी बोले – अधिकृत प्रवक्ता तो तीर्थंकर होते हैं। वे इस सारे दर्शन के, अध्यात्म के सर्वोच्च प्रवक्ता, अधिकृत प्रवक्ता होते हैं। उनसे बड़ा कोई प्रवक्ता नहीं होता।

लड़का बोला – क्या आप मुझे उनके दर्शन करा दोगे?

मुनिजी बोले – वे अभी इस एरिया (भरत क्षेत्र) में नहीं हैं। यहां से बहुत दूर महाविदेह क्षेत्र में हैं, वहां जाना अभी मुश्किल है। इसलिए अभी दर्शन की बात मुझे आसान नहीं लग रही है।

लड़का बोला – उनका प्रतिनिधित्व करने वाला, उनकी बात बताने वाला कोई एरिया में है?

संत बोले – हां, हमारे आचार्य हैं। वे तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं। मुनिजी उनको आचार्य जी के पास लेकर आए।

लड़का बोला – गुरुजी! तत्व क्या है, धर्म क्या है?

गुरु ने कहा – जिन प्रज्ञप्त तत्व जो है, उसे धर्म कह दो, तत्व कह दो, सिद्धांत कह दो – एक ही बात है।

लड़का बोला – महाराज! आज का दिन मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि आप जैसे मुनिश्री का संपर्क मुझे मिला। आपने मुझे बहुत सारभूत बातें बता दी। ये बातें मैं आपसे स्वीकार करना चाहता हूं।

मुनिजी बोले – देव, गुरु, धर्म को स्वीकार कर लो। नव तत्वों पर श्रद्धा रखो, यह सम्यक्त्व है।

लड़के ने नव तत्वों को आत्मसात किया और देव, गुरु, धर्म को समझकर धर्म को स्वीकार कर लिया। उन पर श्रद्धा रखने का निर्णय कर लिया।

संत बोले – भाई! सम्यक्त्व का बड़ा महत्व है –

"सम्यक्त्वरत्नान् न परं हि रत्नं।
सम्यक्त्वमित्रान् न परं हि मित्रम्।
सम्यक्त्वबन्धो न परो हि बन्धुः।
सम्यक्त्वलाभान् न परो हि लाभः।।"

सम्यक्त्व से बड़ा कोई रत्न नहीं, सम्यक्त्व से बड़ा कोई मित्र नहीं, सम्यक्त्वरूपी बंधु से बड़ा कोई भाई नहीं और सम्यक्त्व से बड़ा कोई लाभ नहीं।

यह सम्यक्त्व बहुत महत्वपूर्ण चीज है – 'तमेव सच्चं णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयंꣳ – वही सत्य है, वही निशंक है, जो जिनों के द्वारा, तीर्थंकरों के द्वारा, केवलियों के द्वारा, ज्ञानियों के द्वारा प्रवेदित है। यह एक आस्था का सूत्र है कि – तमेव सच्चं णीसंकं – यह श्रद्धा की भाषा है कि वही सत्य है, वही निशंक है।

अनंत काल की यात्रा में जीव को सम्यक् दर्शन की प्राप्ति होना एक अच्छी उपलब्धि होती है। सम्यक्त्व के बिना आचार-क्रिया का पालन करने पर भी विशेष लाभ नहीं होता।

जयाचार्य प्रवर ने कहा है –

जे समकित बिण म्हैं, चारित्र नीं किरिया रे।
बार अनंत करी, पिण काज न सरिया रे।।
हिवं समकित चारित, दोनूं गुण पायो रे,
वेदन समपणै, सह्यां लाभ सवायो रे।।

जयाचार्य प्रवर द्वारा रचित आराधना ग्रंथ बहुत अच्छा, मननीय ग्रंथ है। इसमें कहा गया है कि सम्यक्त्व के बिना आचार-क्रिया का अनंत बार पालन किया होगा, किंतु कार्य सिद्ध नहीं हुआ, यानी मोक्ष नहीं मिला। अब सम्यक्त्व और चारित्र दोनों प्राप्त हैं, इसलिए जितना सहन करें, साधना करें, सवाया लाभ मिल सकेगा।

अंक के बिना शून्य बेकार है, अंक एक है और उसके आगे शून्य लगाओ तो 10 हो जाएंगे, फिर शून्य लगाओ तो 100 हो जाएंगे, फिर शून्य लगाओ तो 1000 हो जाएंगे – यों मूल्य बढ़ता जाएगा, महत्व बढ़ता जाएगा। अगर अंक हटा दो, फिर केवल शून्य हैं, तो उनका क्या मूल्य है? अंक साथ में हो तो शून्यों का भी मूल्य है।

इस प्रकार सम्यक्त्व है तो आचार-क्रिया का बहुत महत्व है। सम्यक्त्व विहिन आचार है तो उसका ज्यादा महत्व नहीं है, थोड़ा महत्व मान लें। हालांकि पुण्य का बंध तो हो सकता है। अभव्य जीव भी नवग्रैवेयक तक चला जाए, परंतु मोक्ष में कभी नहीं जाता है। यह सबसे बड़ी बात है कि सम्यक्त्व के बिना अभव्य जीव के पुण्य का ठाठ तो बंध सकता है, किंतु मोक्ष का ठाठ उसे नहीं मिलता है। सम्यक्त्व आ गया, फिर तो निश्चित कालावधि में मोक्ष का मिलना सुनिश्चित है। यह सम्यक्त्व की महिमा है, गरिमा है।

आदमी का दृष्टिकोण सम्यक रहे। दृष्टिकोण तथ्यपरक रहे, कहीं फालतू दुराग्रह नहीं हो। सदैव सत्याग्रह रहे –

पक्षपातो न मे वीरं, न द्वेषः कपिलादिषु।
युक्तिमद्वचनं यस्य, तस्य कार्यः परिग्रहः।।

मेरा भगवान महावीर से क्या पक्षपात है? भगवान महावीर मेरे क्या लगते हैं? वे मेरे काका या दादा तो हैं नहीं। अन्य दर्शनों के कपिल आदि जो भी प्रणेता हैं, उनसे मेरा कोई द्वेष नहीं है। जिसका वचन युक्तियुक्त है, उसका परिग्रहण कर लेना चाहिए – यह मेरा आस्था का सूत्र है। यह निष्ठा यथार्थ की निष्ठा है। हमारा सम्यक्त्व पुष्ट रहे और चारित्र का योग रहेगा तो मोक्ष तो मिलने ही वाला है। हम सम्यक्त्व और चारित्र की सम्यक आराधना करते रहें – यह काम्य है।

बोलती किताब

अणुव्रत : नैतिकता का शंखनाद

व्यक्ति और समाज की सापेक्षता - व्यक्ति और समाज एक-दूसरे के अस्तित्व का आधार हैं। व्यक्ति की असहायता ने समाज को जन्म दिया और समाज व्यक्ति की सुविधा का माध्यम बना। जैन दर्शन ने इस सापेक्षता को 'परस्परोपग्रह'—अर्थात परस्पर सहयोग—के सिद्धांत से परिभाषित किया। जैसे जीव और पुद्गल का परस्पर सह-अस्तित्व भौतिक जगत को संचालित करता है, वैसे ही व्यक्ति और समाज का परस्पर सहयोग सामाजिक संरचना को संभव बनाता है। इस सहयोग में व्यक्ति महत्त्वाकांक्षा और शक्ति के जाल में उलझता है, जिससे समाज में असंतुलन उत्पन्न होता है और अनुशासन तथा दंडनीति की आवश्यकता पड़ती है।

धर्म: सामाजिक व्यवस्था या आत्म-नियमन? - धारणा है कि धर्म समाज के संयमन का उपकरण है, किंतु जैन दर्शन इसे आत्म-नियमन और आत्म-मुक्ति का साधन मानता है। धर्म का मूल उद्देश्य व्यक्ति की आत्म-शुद्धि है, समाज का नियमन तो उसका गौण फल है। आत्म-हित की दृष्टि से धर्म इहलोक और परलोक दोनों में कल्याणकारी है। व्रत, संयम, और आत्म-शोधन की प्रक्रियाएं व्यक्ति को अंतर्मुखी बनाकर उसकी आत्मिक उन्नति सुनिश्चित करती हैं। धर्म यदि केवल बाह्य नियमों तक सीमित रह जाए तो वह अपने मूल उद्देश्य से विमुख हो जाता है।

अणुव्रत: सामान्य व्यक्ति के लिए संयम का मार्ग - अणुव्रत उन व्यक्तियों के लिए संयम की मध्यम दिशा है, जो संन्यास या महाव्रत ग्रहण नहीं कर सकते। इसमें पाँच व्रत—अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह—जीवन की न्यूनतम नैतिक मर्यादा के रूप में स्वीकार किए जाते हैं। ये व्रत केवल बाह्य आचरण नहीं, बल्कि आंतरिक वृत्तियों की शुद्धि के उपाय हैं। समाज में व्रतों की उपेक्षा इसलिए होती है क्योंकि अधिकतर लोग उनकी आत्मा को नहीं, केवल कलेवर को अपनाते हैं। जब तक व्रत जीवन का आदर्श न बनें, तब तक उनका प्रभाव सतही ही रहेगा।

अणुव्रती जीवन का आदर्श और उसकी चुनौतियाँ - अणुव्रती जीवन का मूल आदर्श है —इच्छाओं और उपार्जन (आरंभ) का न्यूनतमकरण। महारंभ और महापरिग्रह से हिंसा, शोषण और मानसिक अशांति जन्म लेते हैं। अणुव्रती को चाहिए कि वह श्रमशील, आत्मनिर्भर और इच्छाओं का नियंत्रण रखने वाला बने। जीवन के झूठे मानदंडों—जैसे धन और पद के आधार पर व्यक्ति की श्रेष्ठता—को तोड़कर श्रम और संयम को प्रतिष्ठा देनी होगी। जब जीवन मूल्य बदले जाएंगे, तभी व्रतों की आत्मा जीवित होगी और समाज में सच्चा परिवर्तन आएगा।

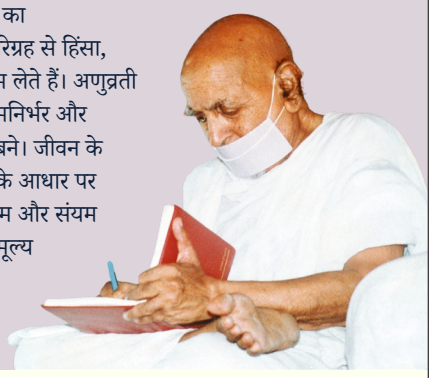

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

गृहस्थ जीवन में कर्म के साथ जोड़ें धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

खेराड़ी।
27 मई, 2025

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी भिलोड़ा से लगभग 13 किलोमीटर का विहार कर खेराड़ी गांव के खेराडी प्राथमिकशाला में पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि अध्यात्म जगत और जैन वाङ्मय में आत्मा का एक वाद, दर्शन और सिद्धांत है — जन्म-मरण और पुनर्जन्म तब तक होता रहता है जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती। पुनर्जन्म का सिद्धांत आत्मवाद के सिद्धांत से जुड़ा हुआ है।

आत्मा का जन्म-मरण अनादिकाल से होता आ रहा है। अनंत समय से आत्मा जन्म-मरण के भ्रम में पड़ी हुई है। इसका कोई तो कारण होगा। प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई कारण होता है, साथ में सहायक सामग्री भी हो सकती है। कारण के मूलतः दो प्रकार हैं – उपादान और निमित्त। आत्मा के जन्म-मरण का कारण हैं चार कषाय – क्रोध, मान, माया और लोभ। जब ये कषाय प्रवर्धमान होते हैं, तब आत्मा कलुषित होकर आगे से आगे जन्म-मरण करती रहती है। जब ये क्षीण हो जाते हैं, तब आत्मा का जन्म-मरण समाप्त हो जाता है। यह आस्तिकवाद का सिद्धांत है।

नास्तिकवाद में जन्म-मरण का सिद्धांत नहीं माना गया है। उनके अनुसार जो है, वही अंतिम है; आगे कुछ नहीं है। प्रश्न उठ सकता है कि आस्तिकवाद और नास्तिकवाद में से किसकी बात मानी जाए? यह एक संदेहात्मक विषय है, जिससे व्यक्ति अंतर्द्वंद्व में आ सकता है। यहां एक सलाह दी गई है कि हमें पुनर्जन्म, परलोक, पुण्य-पाप, और किए गए कर्मों का फल मानकर चलना चाहिए। पाप के कार्य मत करो, अच्छे कार्य करते रहो। यदि परलोक है, तो अच्छे कार्यों का अच्छा फल मिलेगा। और यदि परलोक नहीं भी है, तो भी अच्छा जीवन जीने से जीवन में शांति और संतोष रहेगा। इससे दोनों ओर से लाभ है।

पूज्यवर ने फरमाया कि आस्तिकवाद और नास्तिकवाद का अध्ययन किया जा सकता है, पर मेरा मानना है कि आस्तिकवाद के सिद्धांत को मानकर जीवन शैली अपनाएं। हम तो साधु हैं, हमारी साधुता का आधार आस्तिकवाद ही है। हर व्यक्ति संन्यासी बन जाए, यह कठिन है, परंतु अच्छा गृहस्थ अवश्य बनना चाहिए। जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहें तो जीवन श्रेष्ठ बन सकता है। धर्म कहता है कि अहिंसा, संयम और तप को जीवन में सार्थक करो। किसी के साथ धोखाधड़ी मत करो। चोरी का धन मोरी में चला जाता है। आचरण में धर्म आना चाहिए। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को जीवन में अपनाओ। जिस क्षेत्र में आप हों, वहां ईमानदारी रखें, अहिंसा और सद्भावना रखें। गृहस्थ जीवन में कर्म के साथ धर्म को जोड़ दिया जाए तो जीवन सुंदर और कल्याणकारी बन सकता है।

पूज्यवर ने खेराड़ी के सरपंच सहित अच्छी संख्या में उपस्थित ग्रामवासियों को प्रेरणाएं प्रदान कीं। पूज्यवर के स्वागत में खेराड़ी के सरपंच अमृतभाई पटेल ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मन की चंचलता रोकने के लिए ध्यान है सशक्त माध्यम : आचार्यश्री महाश्रमण

उम्मेदपुर।
28 मई, 2025

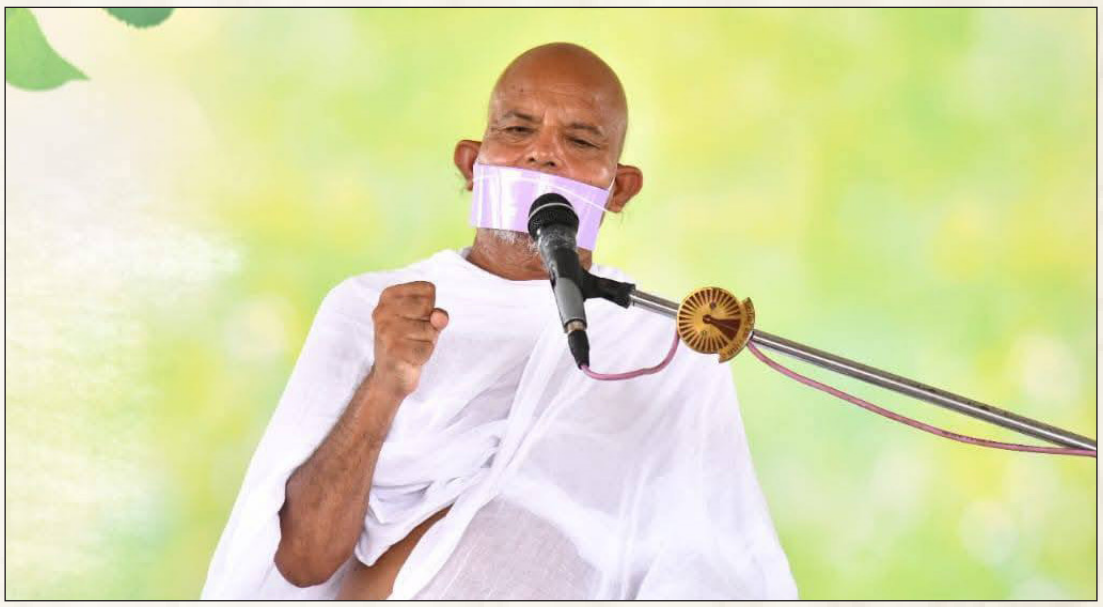

जन-जन के तारणहार आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 11 किमी का विहार कर उम्मेदपुर में स्थित गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री अरुण पटेल के निवास स्थान में पधारे। स्थानीय पटेल समाज सहित बड़ी संख्या में लोगों ने पूज्यवर का भावपूर्वक स्वागत एवं अभिवंदन किया।

उपस्थित विशाल परिषद को संबोधित करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि हमारे जीवन में आत्मा नामक तत्व है और दूसरा तत्व है शरीर। आत्मा और शरीर का मिश्रित रूप ही हमारा वर्तमान जीवन है। आत्मा और शरीर में भेद है—आत्मा शाश्वत, अछेद्य और अदाह्य है, जबकि शरीर नश्वर है। हमें शरीर के साथ-साथ वाणी और मन भी प्राप्त हैं। शरीर से हम क्रियाएं करते हैं, वाणी से बोलते हैं और मन से चिंतन एवं कल्पना करते हैं। जैसे शरीर को सूक्ष्मता से जानना कठिन है, वैसे ही किसी के मन को जानना भी कठिन होता है।

मन एक ऐसा तत्व है, जो यदि दृढ़ बन जाए तो व्यक्ति शक्तिशाली बन सकता है। मनोबल की मजबूती भी जीवन की एक बड़ी उपलब्धि है। मन में विचारों का आना उसकी चंचलता है, और कभी-कभी मलिनता भी। हमारा मन सकारात्मक और वास्तविक चिंतन कर सकता है, तो नकारात्मक भी। मन में इच्छाएं और आसक्तियां भी जन्म लेती हैं। मन वाले प्राणी ही अधिक पुण्य और पाप करते हैं, जबकि जड़ चेतना वाले प्राणी उतना पुण्य या पाप नहीं कर सकते।

मन की सबसे बड़ी समस्या है उसकी चंचलता। राग और द्वेष मन को चंचल बनाते हैं। संसार में सबसे बड़ा तत्त्व है—आकाश, सबसे कठिन कार्य है—स्वयं की पहचान करना। सबसे आसान कार्य है—दूसरों की निंदा करना, और सबसे गतिशील वस्तु है—मन। यदि हम जप-उपासना करें, तो उसका केंद्र मन होना चाहिए। मन में कलुषता आने से पापकर्म का बंध हो सकता है। संवर और निर्जरा की साधना से कर्मबन्धन से बचा जा सकता है।

पूज्यवर ने कहा कि संयम और तप से आत्मा निर्मल होती है। मन की चंचलता को रोकने के लिए ध्यान आवश्यक है। शरीर को स्थिर रखने का प्रयास करें, और श्वास पर मन को एकाग्र करें। हमारे संकल्प श्रेष्ठ हों। जीवन में सद्भावना, अहिंसा की भावना, नैतिकता, ईमानदारी और नशामुक्ति बनी रहे। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों से जीवन श्रेष्ठ बन सकता है।

हमने तो गृह त्याग कर संन्यास स्वीकार किया है। साधु वे होते हैं जो कंचन-कामिनी के त्यागी हों। यदि मोह-माया में अटक गए, तो साधु भी सिद्धि प्राप्ति में अटक सकते हैं। मन का लटकना, अटकना और भटकना नहीं होना चाहिए। जो कंचन-कामिनी से अनासक्त होता है, वही सच्चा त्यागी साधु होता है। संतों की संगति थोड़ी भी हो, तो वह भी कल्याणकारी होती है।

पूज्यवर ने स्थानीय निवासियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के विषय में प्रेरित करते हुए संकल्प दिलवाए। पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय कन्याओं ने गीत प्रस्तुत किया। ग्राम की ओर से अरुणभाई पटेल, कनुभाई पटेल और विशाल पटेल ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं। किशनलाल डागलिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 जून - 15 जून, 2025

ज्ञान और प्रत्याख्यान से जीवन में होता है उजाला : आचार्यश्री महाश्रमण

मोडासा।
30 मई, 2025

विश्व की महान आध्यात्मिक विभूति, तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी मोडासा के बहरी क्षेत्र से नगर के श्री एच. एल. पटेल सरस्वती विद्यालय प्रांगण में पधारे। नगर के विभिन्न स्थलों पर श्रावक समाज ने भावपूर्ण दर्शन-सेवा कर पूज्यवर का स्वागत किया।

जिनवाणी की अमृत वर्षा करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का अत्यंत महत्व है। अज्ञान रूपी अंधकार को केवल ज्ञान रूपी प्रकाश से ही दूर किया जा सकता है। ज्ञान एक प्रकार की ज्योति और अग्नि है, जिससे जीवन में स्पष्टता, विवेक और दिशा आती है।

आचार्यश्री ने कहा कि आज दुनिया भर के शैक्षणिक संस्थानों में विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान किया जा रहा है। ज्ञान एक अमूल्य सम्पदा है। पढ़ने और सुनने से ज्ञान प्राप्त होता है। धर्मगुरुओं और संतों के प्रवचनों से भी व्यक्ति आध्यात्मिक और नैतिक ज्ञान अर्जित कर सकता है। सुनकर मनुष्य कल्याणकारी और पापकर्मों का अंतर समझता है और जो श्रेयस्कर है, उसे अपनाता है। सम्यक् ज्ञान हो जाए और वह जीवन में उतर जाए तो जीवन कितना अच्छा हो सकता है।

पूज्यवर ने जीवन के दो प्रकार के सुखों का उल्लेख किया—तात्कालिक (इन्द्रियजन्य) सुख और शाश्वत (आध्यात्मिक) सुख। शब्द, रूप, रस, गंध व स्पर्श-ये पांच विषय हैं। पांच इन्द्रियों के ये पांच विषय हैं। इनके द्वारा भौतिक सुख अथवा तात्कालिक सुख की प्राप्ति हो सकती है। अभौतिक, अलौकिक और आध्यात्मिक सुख आंतरिक होता है।

पदार्थों से मिलने वाला सुख क्षणिक सुख होता है। साधु जीवन कठोर होते हुए भी प्रसन्नता से परिपूर्ण होता है, क्योंकि उसमें त्याग और शांति का समावेश है। जबकि गृहस्थ भौतिक साधनों से युक्त होकर भी भीतर से अशांत रहता है। भौतिक साधनों से सुविधा मिल सकती है, परंतु शांति केवल साधना से ही प्राप्त होती है। इसलिए आदमी को पापों से विरत रहकर आध्यात्मिक सुख प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यवर ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन का लक्ष्य केवल अंक प्राप्त करना नहीं, बल्कि ज्ञान और संस्कार अर्जित करना होना चाहिए। आत्मविश्वास और परिश्रम से सफलता प्राप्त करें। वरदान से नहीं, परिश्रम से पास हों, यही असली उपलब्धि है। ज्ञान का दीप सदा प्रज्वलित रहना चाहिए।

(शेष पेज 13 पर)

अर्हम्

साध्वीश्री कीर्तियशा जी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	वि. सं. 2019, कार्तिक कृष्णा अष्टमी, (20 अक्टूबर 1962) गंगाशहर
माता-पिता :	झूमरदेवी - सोहनलाल जी डागा
वैराग्य भावना:	19 वर्ष की उम्र में (ज्येष्ठा भगिनी साध्वी निर्वाणश्री जी की प्रेरणा से
दीक्षा :	वि.सं. 2043, कार्तिक शुक्ला नवमी (10 नवम्बर 1986), गणाधिपति पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री तुलसी के कर कमलों से लाडनूं में।
चाकरी :	गंगाशहर, बीदासर, राजलदेसर।
कंठस्थ :	दसवैकालिक, उत्तराध्ययन के 29 अध्ययन, संबोधि के 16 अध्याय, चौबीसी -संस्कृत व हिन्दी, भक्तामर, कल्याण मंदिर, आलम्बन सूत्र, कर्तव्य षट्त्रिंशिका, आठ प्रवचन माता की ढालें, संस्कार बोध, आचार-बोध, व्यवहार बोध, श्रावक संबोध, तेरापंथ प्रबोध, तुलसी प्रबोध, महाप्रज्ञ प्रबोध, आठ-अष्टकम्, पंच सूत्रम्, शांत सुधारस भावना, जैन तत्व प्रवेश, पच्चीस बोल, कालूतत्वशतक, बावन-बोल, इक्कीस द्वार, लघुदण्डक, कई ढालें आदि।
विशेष :	तप-जप, स्वाध्याय में रुचि। तीन बार सम्पूर्ण आगम बत्तीसी का पारायण। सिलाई-रंगाई में विशेष दक्षता।
परिवार से दीक्षित :	'शासनश्री' मुनिश्री धर्मरुचि जी, साध्वी श्री निर्वाणश्री जी
यात्रा :	राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली।
तिविहार संथारा :	आचार्य प्रवर के निर्देशानुसार उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के द्वारा 27 मई 2025 दोपहर लगभग 3:47 बजे।
देवलोकगमन :	लगभग 2.5 घंटे के चौविहार संथारे में 28 मई 2025, सायं लगभग 7:00 बजे।

समय का आध्यात्मिक रूप से प्रबंधन करना भी है महत्वपूर्ण : आचार्यश्री महाश्रमण

मोडासा।
29 मई, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 10 किमी का विहार कर मोडासा के बाहर स्थित जीरावला लब्धि विक्रम धाम में पधारे।

परम पावन ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में षट्द्रव्य का सिद्धांत है। यदि कोई पूछे कि यह लोक, यह दुनिया क्या है, तो उसका उत्तर है—'षट्द्रव्यात्मक लोकः'। इस लोक में छह द्रव्य होते हैं, जिनमें चौथा द्रव्य है—काल।

काल अर्थात समय भी एक द्रव्य है। समय सभी को समान रूप से प्राप्त होता है, किंतु प्रश्न यह है कि इसका उपयोग कौन, किस प्रकार करता है। समय का उत्तम, सामान्य या निम्न स्तर पर उपयोग कैसे किया जा सकता है, यह व्यक्ति पर निर्भर करता है। जो व्यक्ति समय का श्रेष्ठ उपयोग करता है, वही श्रेष्ठ व्यक्ति कहलाता है। हमें दिन-रात में 24 घंटे मिलते हैं। आवश्यक कार्यों के अतिरिक्त शेष समय प्रायः व्यापार या अन्य सांसारिक कार्यों में व्यतीत हो जाता है। यदि प्रत्येक घंटे में से 2-2 मिनट निकाले जाएं, तो 48 मिनट में एक सामायिक की जा सकती है। अतः कुछ समय तो अपनी आध्यात्मिक प्रवृत्तियों के लिए भी अवश्य निकालना चाहिए। यदि हम कर्म के लिए समय निकाल सकते हैं, तो धर्म के लिए भी समय निकालना चाहिए। जो समय बीत जाता है, वह लौटकर नहीं आता, इसलिए आने वाले समय का सदुपयोग करें। व्यस्त होना बुरा नहीं, किंतु अस्त-व्यस्त होना उचित नहीं है। मन में शांति और प्रसन्नता बनी रहे; तनाव से दूर रहकर हम अपने सभी कार्यों को भली-भांति संपन्न कर सकते हैं। गृहस्थों का भी कुछ समय धर्म के लिए अवश्य नियोजित हो।

ज्ञानी व्यक्ति अपने ज्ञान के अभ्यास के लिए समय निकाल लेता है। अपने प्रत्येक कार्य को समय पर करने का प्रयास करना चाहिए। सभी को अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना चाहिए। यदि समय का सदुपयोग हो, तो जीवन उत्तम बन सकता है।

पूज्यवर ने स्मरण कराया कि परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी सन् 1983 में मोडासा पधारे थे। लंबे अंतराल के बाद पुनः आगमन हुआ है। यहां धार्मिकता निरंतर पुष्ट होती रहे।

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशाला की 25 बोल पर सुंदर प्रस्तुति हुई। पूज्यवर के स्वागत में मोडासा सभा के अध्यक्ष गौतम कोठारी, सुमेरमल जैन, सुरेश कोठारी आदि ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।